



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 191]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अगस्त 25, 2011/भाद्र 3, 1933

No. 191]

NEW DELHI, THURSDAY, AUGUST 25, 2011/BHADRA 3, 1933

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी तथा संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 अगस्त, 2011

अंतिम जाँच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. तथा यू ए ई के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित "ओपल ग्लासवेयर" के ~~आकलन~~ से संबंधित पाटनरोधी जाँच का अंतिम जाँच परिणाम ।

सं. 14/24/2010-डीजीएडी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

2. यतः मै. ला ओपाला आर जी लि. ने चीन जन. गण. तथा यू ए ई (जिन्हें आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के या वहाँ से निर्यातित ओपल ग्लासवेयर (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष घरेलू उद्योग (जिसे आगे आवेदक कहा गया है) की ओर से समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975, और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) के अनुसार एक आवेदन दायर किया है ।

3. प्राधिकारी ने जाँच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के विरुद्ध जाँच शुरू करने का निर्णय लिया । प्राधिकारी ने अन्य बातों के साथ-साथ पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(5) के अनुसार जाँच शुरू करने से पूर्व पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई परिणामी क्षति के आरोपों का दावा करते हुए आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को अधिसूचित किया । प्राधिकारी ने आरोपित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा तथा प्रभाव का निर्धारण करने और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश करने, जिसे यदि लागू किया जाएगा तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम

6(1) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए 26 अगस्त, 2010 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया ।

#### क. प्रक्रिया

##### 4. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :-

- i. निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें आगे प्राधिकारी कहा गया है) को उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत चीन जन.गण. तथा यूएई (जिन्हें आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल या वहां से निर्यातित "ओपल ग्लासवेयर" (जिसे आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए घरेलू उद्योग की ओर से ला ओपाला आर जी से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ ।
- ii. प्राधिकारी ने नियमावली, 1995 के उप नियम 5(5) के अनुसार जांच शुरू करने से पूर्व पाटनरोधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को अधिसूचित किया ।
- iii. घरेलू उद्योग की ओर से प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के उप नियम 6(1) के अनुसार दिनांक 26 अगस्त, 2010 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना जारी करके संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "ओपल ग्लासवेयर" के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच प्रारंभ करते हैं ताकि कथित पाटन की मौजूदगी, सीमा तथा प्रभाव का निर्धारण किया जा सके तथा पाटनरोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लागू किया जाए तो वह घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी ।
- iv. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, ज्ञात आयातकों/उपयोक्ताओं तथा घरेलू उद्योग को दिनांक 26 अगस्त, 2010 की जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति प्रेषित की थी और जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था ।
- v. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार, ज्ञात निर्यातकों और भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रति उपलब्ध कराई ।

vi. पाटनरोधी नियमों के नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरू करने के विषय में भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को सूचित किया गया था और साथ ही अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह देने का अनुरोध किया गया था । निर्यातकों को भेजे गए पत्र एवं प्रश्नावली की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों के नाम एवं पते के साथ उन्हें भी भेजी गई थी ।

vii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, प्राधिकारी ने संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना मंगाने हेतु प्रश्नावली भेजी:

- क. आर्क इंटरनैशनल मिडिल ईस्ट, ईस्ट एलएलसी, यूएई
- ख. शंघाई फैमिली इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कं०लि०, चीन जन.गण.
- ग. वेंगझौऊ हुईशुंदा इंडस्ट्रियल कं.लि. चीन जन.गण.
- घ. सान्याम सिरेमिक्स लि०, चीन जन.गण.
- ङ. शेन्झेन गुआनागटोंग कं०लि०, चीन जन.गण.
- च. जियानिंग हुईमेडा इंडस्ट्री एंड ट्रेड कं.लि., चीन जन.गण.
- छ. शाओजिंग जिलोंग ग्लासवेयर कं.लि. चीन जन.गण.
- ज. अन्हुई देली ग्लासवेयर कं.लि., चीन जन.गण.
- झ. यिवन सिटी लॉगफेई इंपोर्ट्स एंड एक्सपोर्ट कं.लि., चीन जन.गण.
- ञ. वेंगझौऊ कैथिलिन इंटरनैशनल ट्रेड कं.लि., चीन जन.गण.
- ट. अन्हुई सुन्हेरे, चीन जन.गण.
- ठ. झेजियांग चेंगताई, चीन जन.गण.
- ड. मै० होल वेल्थ लि०, चीन जन.गण.

viii. निम्नलिखित निर्यातक ने उपर्युक्त अधिसूचना का उत्तर दिया है :-

- क. वेंगझौऊ हुईशुंदा इंडस्ट्रियल कं.लि., चीन जन.गण.

ix. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:

- क. तलवार एजेंसीज प्रा०लि०, नई दिल्ली
- ख. होम मेकर इंटरप्राइसेज प्रा.लि., नई दिल्ली
- ग. तनेजा क्रॉकरीज प्रा०लि०, नई दिल्ली
- घ. चिराज अप्लायंसेज प्रा०लि०, कोलकाता
- ङ. पारस इंटरनैशनल, नई दिल्ली
- च. बैरन एजेंसीज प्रा०लि०, कोलकाता
- छ. आदित्य प्रमोटर्स प्रा.लि., नई दिल्ली
- ज. सेवन सीज कॉर्पोरेशन, थाणे, महाराष्ट्र
- झ. लक्ष्मी क्रॉकरीज पुणे प्रा.लि., पुणे, महाराष्ट्र
- ञ. विशाल रीटेल लि०, नई दिल्ली
- ट. सिद्धार्थ इंटरप्राइसेज, भरुच, गुजरात
- ठ. मर्ज इंटरप्राइसेज, मुम्बई, महाराष्ट्र
- ड. राज एजेंसीज, पुणे, महाराष्ट्र
- ढ. हैमिल्टन हाउस वेयर प्रा०लि०, दादरा
- ण. के.पी. इंटरनैशनल, नई दिल्ली
- त. ट्रेड ट्रेकर्स, नई दिल्ली
- थ. डब्ल्यूकेसी ग्लासवेयर प्रा.लि., नई दिल्ली
- द. रुद्र इंटरनैशनल, नई दिल्ली

- x. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित आयातकों ने जवाब दिया है।
- क. मै. हेमिल्टन हाउसवेयर प्राइवेट लिमिटेड
- ख. मै. आदित्या प्रमोटर्स लिमिटेड
- xi. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय रूपांतर को हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु एक सार्वजनिक फाइल के रूप में खुला रखा है।
- xii. नई दिल्ली में सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा चीन जन.गण. के दूतावास को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी) संबंधी एक प्रश्नावली अग्रेषित की गई थी। प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों को सूचित किया कि वे पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के आलोक में आवेदकों के दावों की जांच करना चाहते हैं। अतः चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तुओं के निर्यातकों/उत्पादकों को पाटनरोधी नियमों के अनुबंध के पैरा 8 के उप पैरा (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था ताकि प्राधिकारी द्वारा इस बात का निर्धारण किया जा सके कि क्या चीन जन.गण. के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किया जा सकता है।
- xiii. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से जांच अवधि सहित के संबद्ध वस्तुओं के पिछले तीन वर्षों के आयातों का विवरण उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था।
- xiv. सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने तथा बेचने की लागत के आधार पर क्षति रहित कीमत निकाली गई है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- xv. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के बारे में अंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हुए प्राधिकारी द्वारा अंतिम जांच परिणाम 27.6.2011 को जारी किए गए थे।
- xvi. प्राधिकारी ने दिनांक 29.7.2011 को हितबद्ध पक्षकारों की मौखिक सुनवाई की जिसके बाद हितबद्ध पक्षकारों ने लिखित अनुरोध और उत्तर प्रस्तुत किए हैं। इन अनुरोधों पर संगत सीमा तक इस जांच परिणाम में विधिवत विचार किया गया है/उनकी जांच की गई है।

- xvii. चीन जन.गण. के सहयोगी उत्पादक/निर्यातक द्वारा प्रस्तुत बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के दावे सहित आंकड़ों और सूचना का सत्यापन किया गया है ।
- xviii. इस अंतिम जांच परिणाम के आधारस्वरूप आवश्यक तथ्यों का प्रकटन करते हुए नियम 16 के प्रावधान के अनुसार दिनांक 16.8.2011 को एक प्रकटन विवरण जारी किया गया था । उस पर प्राप्त टिप्पणियों की संगत सीमा तक इस जांच परिणाम में जांच की गई है ।
- xix. 1 अप्रैल, 2009 से 31 मार्च, 2010 (जांच की अवधि) की अवधि की जांच की गई थी । क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ, प्रवृत्तियों की जांच में वर्ष 2006-07, 2007-08 तथा 2008-09 की अवधि तथा जांच की अवधि शामिल होगी ।
- xx. इस अधिसूचना में \*\*\* का तात्पर्य किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना से है, तथा पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इसे यही माना गया है ।

**अर्थव्यवस्था मंत्रालय, यू ए ई सरकार द्वारा किए गए निवेदन:**

5 अर्थव्यवस्था मंत्रालय, यूएई सरकार द्वारा निम्नलिखित निवेदन किए गए थे:-

- (i) दिनांक 01/09/2010 को नई दिल्ली स्थित यूएई के दूतावास द्वारा अग्रिम सूचना प्राप्त की गई थी तथा मामले की जांच दिनांक 26/08/2010 को शुरू की गई थी । यह असंगत है ।
- (ii) उत्पाद का कार्यक्षेत्र बहुत अधिक व्यापक है और इसमें उत्पाद प्रकारों की एक व्यापक रेंज को कवर किया गया है । ये उत्पाद, समान उत्पाद नहीं है ।
- (iii) वर्तमान मामले के अत्यधिक विचित्र तथ्यों के कारण दोनों संयंत्रों के निष्पादन की अलग-अलग जांच करने के याचिकाकर्ता के अनुरोध से घरेलू उद्योग की छवि विकृत होगी क्योंकि इसमें सितम्बर, 2007 में एक नए संयंत्र की स्थापना भी शामिल है ।
- (iv) यूएई द्वारा किए गए निर्यातों से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई क्योंकि क्षति अवधि के दौरान यूएई की निर्यात कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हो रही थी । अन्य बातों के साथ-साथ यह कहा गया है कि अन्य देशों से आयात की औसत कीमत कम थी और कुल आयातों में यूएई के आयातों के हिस्से में गिरावट आई है ।
- (v) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत क्षति संबंधी दावा, याचिका में प्रस्तुत आंकड़ों से मेल नहीं खाता है । शिकायतनामे में कथित वास्तविक क्षति के साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराए गए हैं । दूसरी ओर, आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग फल-फूल रहा था तथा

मात्रा एवं घरेलू बिक्री, उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो रही थी तथा स्टॉक में कमी की स्थिति थी ।

- (vi) घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की पद्धति विवादास्पद है ।
- (vii) निर्यात का अनुमानित पहुँच प्रभार अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर बताया गया है । कथित क्षति का कारण आयातों को छोड़कर अन्य कारक हो सकते हैं तथा किसी भी प्रकार की क्षति नहीं पाई गई है ।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच:-

6 प्राधिकारी ने उपर्युक्त मुद्दों की निम्नानुसार जांच की है :-

- i. नई दिल्ली स्थित यूएक्सई दूतावास को दिनांक 23/08/2010 को ई-मेल द्वारा अग्रिम सूचना पत्र जारी किया गया था तथा दिनांक 26/08/2010 को कार्यवाही शुरू की गई थी । अतः यूएई सरकार को जांच शुरू करने से पूर्व अधिसूचित कर दिया गया था ।
- ii. प्राधिकारी मानते हैं कि वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद ओपल ग्लासवेयर है जिसके अलग-अलग प्रकारों का उत्पादन किया जाता है तथा बेचा जाता है । अलग-अलग प्रकार के ओपल ग्लासवेयर विनिर्माण प्रक्रिया, उत्पादन प्रौद्योगिकी, कच्ची सामग्रियों तथा सीमाशुल्क वर्गीकरण के मामले में समान उत्पाद माने जाते हैं । यद्यपि विभिन्न ग्लासवेयर प्रकारों का उपयोग अलग-अलग हो सकता है तथापि इस कारण से विभिन्न प्रकारों को असमान वस्तु नहीं माना जा सकता है । विभिन्न प्रकार के ओपल ग्लासवेयर उत्पादों को "सेटों" में बेचा जाता है । विभिन्न प्रकार के सेट मौजूद होने के कारण विचाराधीन उत्पाद के अंतर्गत व्यापक किस्में शामिल हैं और विनिर्माता आसानी से ग्लासवेयर के एक प्रकार को दूसरे प्रकार से बदल सकते हैं । तथापि, प्राधिकारी ने संख्या/सेटों की बजाए भार के आधार पर संबद्ध वस्तु की लागत/कीमत पर विचार किया है ताकि बाद वाले मामले में शामिल कई आकारों और प्रकारों के कारण उत्पन्न समस्या का निवारण किया जा सके ।
- iii. प्राधिकारी ने समग्र रूप में घरेलू उद्योग की क्षति का आकलन किया है न कि संयंत्र-वार, नए संयंत्र की उत्पादन लागत पर इस प्रयोजनार्थ अलग से विचार नहीं किया गया है ।

- iv. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध देशों से आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन किया, है। चूंकि नियमों में विनिर्दिष्ट शर्तें, वर्तमान मामले में पूरी हो रही हैं अतः प्राधिकारी द्वारा नियमों के अंतर्गत इस प्रकार आकलन किया जाना अपेक्षित है।
- v. वर्तमान जांच में समुचित स्थानों पर प्राधिकारी द्वारा संगत आर्थिक मानदण्डों सहित क्षति के विभिन्न मानदण्डों की जांच की गई है।
- vi. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूएई के किसी भी निर्यातक ने वर्तमान जांच में सहयोग नहीं किया है और निर्धारित प्रपत्र एवं पद्धति में सामान्य मूल्य से संबंधित अपेक्षित सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। यूएई के किसी निर्यातक की घरेलू बिक्री कीमत अथवा उत्पादन की वास्तविक लागत के आधार पर सामान्य मूल्य के साक्ष्य के अभाव में, प्राधिकारी ने रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।
- vii. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूएई के किसी भी निर्यातक ने निर्यात कीमत को दर्शाते हुए निर्यातक प्रश्नावली उपलब्ध नहीं कराई है। अतः प्राधिकारी का विचार वर्तमान जांच परिणाम के संगत पैरा में इंगितानुसार यूएई हेतु निर्यात कीमत का निर्धारण करने का है। वर्तमान जांच में कारणात्मक संबंध की भी जांच की गई है।

**प्रारंभिक जांच परिणाम के पश्चात अनुरोध:-**

- 7 प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद यू ए ई प्राधिकारियों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
  - i. यू ए ई के अर्थव्यवस्था मंत्रालय ने यह दोहराया है कि दिल्ली स्थित यू ए ई के दूतावास को पाटनरोधी जांच की शुरुआत के बारे में कोई पूर्व सूचना नहीं मिली है।
  - ii. यू ए ई प्राधिकारियों को प्रारंभिक जांच परिणाम के बारे में सरकारी तौर पर कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ है।
  - iii. घरेलू उद्योग को हुई आरोपित क्षति की पुष्टि नहीं की गई है। इस संबंध में घरेलू बिक्री, स्थापित क्षमता, बिक्री कीमत, उत्पादन, रोजगार एवं मजदूरी जैसे संकेतकों के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है जिनसे जांच अवधि के दौरान सकारात्मक प्रवृत्ति का पता चला है।
  - iv. संबद्ध उत्पाद के संवर्धित आयातों और आरोपित वास्तविक क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की पुष्टि नहीं की गई है। प्रारंभिक जांच परिणाम के पृष्ठ 22 (ii) में दिया गया



यह जांच परिणाम कि घरेलू उद्योग कीमतों को कम करने के लिए बाध्य हुआ है, भ्रामक है क्योंकि क्षति अवधि के दौरान बिक्री कीमत में लगातार वृद्धि हुई थी।

- v. कारणोत्तर विश्लेषण अपूर्ण है क्योंकि घरेलू उद्योग पर अधिक क्षमता के प्रभाव के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। इसके अलावा, उन तीसरे देशों से आयातों के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है जिनकी कीमतें यू ए ई की आयात कीमत से कम हैं।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

8 प्राधिकारी ने उपर्युक्त मुद्दों की निम्नानुसार जांच की है।

i. प्राधिकारी उपर्युक्त पैरा 6(i) पर उल्लिखित स्थिति दोहराते हैं। इस बात को हर हालत में नोट किया जाता है कि यू ए ई की सरकार ने जांच में विधिवत भाग लिया है और प्रारंभिक जांच परिणाम से पूर्व और उसके बाद अनुरोध किए हैं। इन अनुरोधों पर विधिवत विचार किया गया है और प्राधिकारी के प्रारंभिक जांच परिणामों और वर्तमान जांच परिणाम में इनकी जांच की गई है।

ii. प्रारंभिक जांच परिणाम भारत के राजपत्र में प्रकाशित किए गए थे और उन्हें वाणिज्यिक विभाग, भारत सरकार की वेबसाइट पर भी डाला गया था। अतः ये जांच परिणाम सार्वजनिक क्षेत्र में थे।

iii. यह जरूरी नहीं है कि घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि समस्त आर्थिक मापदंडों के संबंध में की जाए। पाटनरोधी नियमावली में केवल उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों का मूल्यांकन और जांच करने का आदेश है। वर्तमान जांच में क्षति की पुष्टि लाभप्रदता, नकद प्रवाह, माल सूची, लगाई गई पूंजी पर आय, क्षमता उपयोग जैसे प्रमुख आर्थिक मपदंडों के संबंध में की गई है जिनकी वजह से संबद्ध देशों से आयातों के पाटन का कीमत कटौतीकारी और कीमत न्यूनकारी प्रभाव पड़ा है।

iv. कारणात्मक संबंध के मुद्दे की जांच इस जांच परिणाम में उचित स्थान पर की गई है। प्रारंभिक जांच परिणाम के पृष्ठ 22 पर उप पैरा (ii) में उल्लिखित जांच परिणाम में इस तथ्य का हवाला दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने बिक्री लागत में वृद्धि के मुकाबले, बिक्री कीमत घटाई है। इसका इस अंतिम जांच परिणाम में समुचित प्रदर्शन किया गया है।

v. जहां तक घरेलू उद्योग की अधिक क्षमता का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता मांग के स्तर पर ही रही है। अतः यह अधिक क्षमता का मामला नहीं बनता है। अन्य स्रोतों से हुए आयात संबद्ध देशों की संचयी कीमत से अधिक पर हुए हैं।

### अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दे

9 वर्तमान जांच के बारे में हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं:-

क. कारखाने को बंद करने का कोई साक्ष्य नहीं है। वार्षिक रिपोर्ट में निदेशक की रिपोर्ट अथवा इसका एक्सचेंज से संबंधित सूचना से कारखाने को बंद करने का कोई संकेत नहीं है।

- ख. घरेलू उद्योग ने याचिका में सूचना का प्रकटन करने में अत्यधिक गोपनीयता बरती है । समूची क्षति अवधि के लिए वार्षिक रिपोर्ट उपलब्ध नहीं कराई गई हैं ।
- ग. सामान्य आंकड़ों से आयात को अलग करने में शामिल कार्य प्रणाली का प्रकटन आवेदन में नहीं किया गया है और न ही आयातकों को सामान्य आंकड़े उपलब्ध कराए गए हैं । हितबद्ध पक्षकारों को आयात आंकड़ों की सॉफ्ट कॉपी उपलब्ध नहीं कराई गई है । इस तथ्य के मद्देनजर यह आवश्यक है कि सामान्य आंकड़ों में सभी प्रकार के ग्लासवेयर शामिल हैं जबकि विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र केवल ग्लासवेयर तक सीमित है ।
- घ. "स्पिन प्रौद्योगिकी" से निर्मित ओपल ग्लास वेयर के लिए पृथक मार्जिन का निर्धारण करना होगा ।
- ङ. जांच में पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क निदेशालय, तथा घरेलू उद्योग द्वारा जिन आवश्यक दस्तावेजों पर भरोसा किया गया है, उन्हें सार्वजनिक सुनवाई में निवेदन करने के बावजूद उपलब्ध नहीं कराया गया है ।
- च. आयातक ने घरेलू उद्योग से यह अनुरोध किया है कि आई बी आई एस के आंकड़े सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध कराए जाएं । इसके लिए घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया कि वे केवल वही साक्ष्य उपलब्ध कराने के लिए बाध्य हैं जो उनके पास यथोचित रूप में उपलब्ध है । इस अनुरोध का एक अर्थ यह निकलता है कि जिसे वे प्राप्त करते हैं वह उनके पास अनुचित रूप से उपलब्ध है ।
- छ. आयात आंकड़े उपलब्ध कराने के कारण निम्नानुसार हैं :
- क. जिस साक्ष्य पर भरोसा किया गया है, उसे उक्त पक्षकार को उपलब्ध कराया जाना चाहिए जिस पर उक्त साक्ष्य के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है ।
- ख. सामान्य आंकड़ों की कांट-छांट के लिए अपनाई गई कार्य प्रणाली का पता लगाने
- ग. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा कांट-छांट करने के लिए अपनाई गई कार्यप्रणाली का प्रकटन किए बिना डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त आंकड़ों की कांट-छांट करने के लिए उन पर भरोसा किया जा रहा है ।
- ज. यद्यपि डी जी ए डी ने प्रारंभिक जांच परिणाम में डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त आंकड़ों को अपनाया है, जिनमें केवल 39 देशों से आयात दर्शाए गए हैं जबकि प्रारंभिक जांच परिणाम में 7 देशों से हुए आयात पर विचार किया गया है । अतः घरेलू उद्योग द्वारा दायर पाटनरोधी करार सही नहीं है ।
- झ. यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने सामान्य आंकड़े प्रदान करने का दावा प्रदत्त अधिकारों से अधिक है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी इस आशय का सकारण आदेश पारित कर सकते हैं ताकि उचित कानूनी कार्रवाई की जा सके ।
- ट. याचिकाकर्ता द्वारा प्रदत्त आयात आंकड़े नितान्त त्रुटिपूर्ण हैं और जांच को प्रदत्त आंकड़ों के आधार पर शुरू नहीं किया जाना चाहिए था ।

- ठ. आयात आंकड़ों में विचाराधीन उत्पाद से इतर उत्पाद शामिल किए गए हैं ।
- ड. गलत कारणात्मक संबंध स्थापित करने के लिए उद्गम के देश को बदल दिया गया है ।
- ढ. निर्यात कीमत का निर्धारण गलत है । घरेलू उद्योग ने किसी तरीके से इन सभी मूल्य वर्गों को "किग्रा." में तब्दील कर दिया गया है । ऐसे परिवर्तन में प्रयुक्त कार्यप्रणाली गलत और वैज्ञानिक आधार से रहित है ।
- ण. यद्यपि, घरेलू उद्योग से यह आशा की जाती है कि वह जांच अवधि सहित 4 वर्ष के लिए सूचना दायर करे । तथापि, केवल जांच अवधि के लिए वित्तीय विवरण उपलब्ध कराए गए हैं ।
- त. क्षति के दावे का वित्तीय विवरण में प्रदर्शित स्थिति से कोई सह-संबंध नहीं है । याचिकाकर्ता की प्रकाशित वार्षिक रिपोर्टों में लाभ दर्शाया गया है जबकि याचिकाकर्ता ने वित्तीय घाटे का दावा किया है ।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

10. यह हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों की निम्नानुसार जांच की गई है:
- क. उत्पाद के स्थगन को सत्यापन दल द्वारा याचिकाकर्ता के कारखाना परिसर में देखा गया था । किसी हितबद्ध पक्षकार ने या तो स्टॉक एक्सचेंज में या फिर वार्षिक रिपोर्ट में उत्पादन स्थगित करने की सूचना देने के लिए किसी सांविधिक अपेक्षा की पुष्टि नहीं की है ।
- ख. यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता ने समूची क्षति अवधि के लिए वित्तीय विवरण उपलब्ध कराए हैं ।
- ग. प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने सामान्य आयात आंकड़ों से संबद्ध वस्तु के आंकड़ों को अलग करने में अपनाई गई कार्यप्रणाली उपलब्ध कराई है ।
- घ. प्राधिकारी का प्रस्ताव है कि केवल चीन जन.गण. के संबंध में तुलना की जाए जहां के उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर के रूप में इस प्रयोजनार्थ अपेक्षित सूचना प्रस्तुत की है । तथापि, यू ए ई, यहां के किसी उत्पादक/निर्यातक ने संगत सूचना प्रस्तुत नहीं की है, के मामले में प्राधिकारी के लिए स्पिन तथा प्रेस उत्पादों के लिए पृथक पाटन तथा क्षति मार्जिन निर्धारित करना व्यवहार्य नहीं है क्योंकि आयात आंकड़ों में प्रौद्योगिकी प्रैसों के आधार पर उत्पाद का भेद नहीं किया गया है जिसके जरिए उनका विनिर्माण किया गया है ।
- ड. नियमों में निर्दिष्ट प्राधिकारी को अपने खुद के स्रोतों से सूचना प्राप्त करने की अनुमति है । इसके अलावा, निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्राप्त की गई ऐसी सूचना का प्रकटन हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष करना अपेक्षित नहीं है । निर्दिष्ट प्राधिकारी अपने खुद के स्रोतों से सूचना एकत्र करने और उस आधार पर जांच परिणाम दर्ज करने के हकदार हैं । इसका अलावा, निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसी सूचना का प्रकटन करने के लिए बाध्य नहीं हैं जो अन्यथा सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है ।
- च. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने आवेदक प्रपत्र के भाग-1 की अपेक्षाओं की पूर्ति करते हुए आयातों की देशवार मात्रा और मूल्य दर्शाते हुए सूचना प्रदान की है । घरेलू उद्योग ने

विचाराधीन उत्पाद के आयातों को सूचीबद्ध करते हुए सौदेवार सूचना भी उपलब्ध कराई है जिसे याचिका में निहित आयातों की मात्रा और मूल्य के निर्धारण का आधार बनाया गया है ।

- छ. घरेलू उद्योग ने सौदेवार आयात तथा आयात विवरण, दोनों उपलब्ध कराए गए हैं जिसे घरेलू उद्योग द्वारा पूर्व में प्रस्तुत पत्र में स्पष्ट किया गया है । आयातकों को उस पर टिप्पणियां देने का अवसर मिला है । निर्दिष्ट प्राधिकारी उसके द्वारा प्राप्त ऐसी सूचना का प्रकटन करने के लिए बाध्य नहीं है जो सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है ।
- ज प्राधिकारी ने केवल विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर विचार किया है । सी.शु. उपशीर्ष 7013 में डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों में विचाराधीन उत्पाद और अविचाराधीन उत्पाद, दोनों प्रकार के ग्लासवेयर उत्पादों के सभी प्रकार शामिल हैं । अतः डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों में 39 देश दर्शाए गए हैं जबकि याचिका में प्रदत्त आई बी आई एस के छांटे गए आंकड़ों में ऐसे केवल 7 देश हैं जहां से विचाराधीन उत्पाद का आयात किया गया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि अविचाराधीन उत्पाद का आयात वर्तमान प्रयोजनार्थ संगत नहीं है ।
- झ. चूंकि डी जी सी आई एस सामान्य प्रवेश बिल वार आंकड़े सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए उन्हें हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध नहीं कराया गया है ।
- ञ प्राधिकारी ने केवल उन आयात सौदों को हिसाब में लिया है, जो विचाराधीन उत्पाद और खासकर तब जब संबद्ध वस्तु का कोई अनन्य आई टी सी एच एस कोड न हो, से संबंधित हैं । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने प्रवेश बिलवार आयात आंकड़े उपलब्ध कराए हैं जिन पर याचिका में भरोसा किया गया है । हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि ऐसे आयात आंकड़े कम बताए गए हैं और उनमें उसके खुद के आयात शामिल नहीं हैं । जांच में यह नहीं दर्शाया गया है कि आयात की वास्तविक मात्रा घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई मात्रा से अधिक है ।
- ट प्राधिकारी ने केवल उन आयात सौदों को हिसाब में लिया है, जो विचाराधीन उत्पाद और खासकर तब जब संबद्ध वस्तु का कोई अनन्य आई टी सी एच एस कोड न हो, से संबंधित हैं ।
- ठ. इस बात की पुष्टि नहीं की गई है कि घरेलू उद्योग ने किसी आयात सौदे में उद्गम के देश को बदल दिया है ।
- ड निर्यात कीमत का निर्धारण चीन के प्रतिवादी निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराई गई उस सूचना के आधार पर किया जाएगा जिसका विधिवत सत्यापन किया गया है । जहां तक चीन के असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का संबंध है, प्राधिकारी का प्रस्ताव चीन जन.गण. के सहयोगी निर्यातक की प्रतिनिधिक न्यूनतम निर्यात कीमत पर भरोसा करने का है । जहां तक यू ए ई का संबंध है, प्राधिकारी ने सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर निर्यात कीमत निर्धारित की है ।
- ढ. याचिकाकर्ता ने समूची क्षति अवधि के लिए वार्षिक रिपोर्टों की प्रति प्रस्तुत की है जिसे सार्वजनिक फाइल के जरिए हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया गया है ।
- ण. प्राधिकारी ने संगत अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हुए लाभ के बारे में सत्यापित सूचना पर भरोसा किया है । वार्षिक रिपोर्टों में दर्शाए गए लाभों में गत वर्ष के स्टॉक पर लाभ शामिल है जिसका मूल्यांकन उस कीमत पर किया गया है, जो उत्पादन लागत से काफी कम है ।

### प्रकटन विवरण के बाद हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

11. प्रकटन विवरण के बाद हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं:

क. नियम 16 की अपेक्षा का अनुपालन न किया गया है। पाटन मार्जिन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के निर्धारण हेतु जिन निर्यात आंकड़ों पर भरोसा किया गया है, उन्हें उपलब्ध नहीं कराया गया है।

ख. एक और सार्वजनिक सुनवाई का अनुरोध।

ग. जांच जल्दबाजी में की गई है जिससे न्याय बाधित हुआ है।

घ. उत्पादन स्थगित करने की सूचना सेबी को नहीं दी गई है और वार्षिक रिपोर्ट में उल्लेख नहीं है जो ऐसी घटनाओं की सूचना देने के लिए आवश्यक विधिक अपेक्षाएं हैं और इसीलिए घरेलू उद्योग का दावा झूठा है।

ङ. सामान्य आंकड़ों में कांट-छांट के लिए अपनाई गई कार्यप्रणाली उपलब्ध नहीं कराई गई हैं।

च. याचिकाकर्ता ने आईबीआईएस से आयात आंकड़े दायर नहीं किए हैं। प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण हेतु डीओसीआई एंड एस को अपनाया है।

छ. याचिकाकर्ता ने आयात आंकड़ों में उद्गम का देश बदल दिया है।

ज. क्षति का दावा वित्तीय विवरणों में किए गए लाभ के दावे के विपरीत है। प्राधिकारी ने इस आशय का गलत निष्कर्ष निकाला है कि माल सूचियों का मूल्यांकन उत्पादन लागत से काफी कम कीमत पर किया गया है। हमें प्रदत्त वित्तीय विवरणों में ऐसे किसी अभिकथन का उल्लेख नहीं है। वित्तीय विवरणों में मालसूचियों के किसी बट्टे खाते का प्रकटन नहीं है।

झ. याचिकाकर्ता द्वारा उत्तर दायर करने की निर्धारित तारीख के बाद वित्तीय विवरणों का प्रकटन।

ट. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि दोनों तकनीकी प्रतिक्रियाओं के जरिए उत्पादित उत्पाद की कीमत में भारी अंतर होने के मध्य नजर पाटनरोधी शुल्क मूल्यानुसार लागू किया जाना चाहिए।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

12 प्राधिकारी ने उपर्युक्त मुद्दों की निम्नानुसार जांच की है :-

क. प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक, आयातक द्वारा प्रदत्त सूचना और आईबीआईएस सूचना पर भरोसा किया है। आईबीआईएस सूचना याचिकाकर्ता द्वारा प्रदान की गई याचिका में ही हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध करा दी गयी थी। प्रतिवादी निर्यातक तथा आयातक द्वारा प्रदत्त वास्तविक सूचना का प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया जा सकता क्योंकि इन पक्षकारों ने गोपनीयता का दावा किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम-7 में किसी गोपनीय सूचना प्रकटन या तो प्रकटन विवरण में या फिर अंतिम जांच परिणाम में करने का प्रावधान है। यह स्पष्ट किया जाता है कि चूंकि आईबीआईएस ने डीजीसीआई एंड एस की तुलना में आयातों की काफी अधिक मात्रा दर्शाई गई है इसलिए प्राधिकारी ने वर्तमान जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ आईबीआईएस के आंकड़ों पर भरोसा किया है।

ख. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में मौखिक सुनवाई 29.07.2011 को हुई थी जिसमें हितबद्ध पक्षकारों की विस्तार से सुनवाई हुई थी। एक और मौखिक सुनवाई करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों ने कोई नया आधार प्रस्तुत नहीं किया था। इसके अलावा, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर अंतिम जांच परिणाम में समुचित विचार किया गया है।

ग. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच कानून में निर्धारित समय-सीमा के भीतर की जा रही है। कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने जांच शुरूआत संबंधी सूचना का उत्तर नहीं दिया और काफी देर से प्राधिकारी को उत्तर दिया और वह भी जांच की शुरूआत के नौ माह के बाद। इतनी देर से उत्तर देने का कोई बाजिव कारण नहीं बताया गया। अतः प्राधिकारी ने तब भी हितबद्ध पक्षकारों के मुद्दों पर विचार किया।

घ. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने अपने तर्क में यह दोहराया है कि चूंकि घरेलू उद्योग ने संबंधित प्राधिकारी को उत्पादन स्थगित करने की सूचना नहीं दी है इसलिए दावे को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वास्तविक क्षति के बारे में जांच परिणाम उत्पादन, बिक्री एवं क्षमता उपयोग में प्रवृत्तियों के आधार पर दर्ज किए गए हैं जहां सभी विधिक अपेक्षाओं का पालन किया गया है। उत्पादन का स्थगन याचिकाकर्ता द्वारा किया गया केवल एक अतिरिक्त आधार है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने ये जांच परिणाम हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दायर की गई सूचना और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सूचना के आधार पर दर्ज किए हैं। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के परिसरों में मौके पर सत्यापन किया है और घरेलू उद्योग के उत्पादन के स्थगन के समर्थन में साक्ष्य पाया है।

ड. याचिकाकर्ता ने आईबीआईएस के विस्तृत सौदेवार आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। हितबद्ध पक्षकारों ने आयातों की मात्रा और मूल्य का आंकलन करने के लिए आयात आंकड़ों के विश्लेषण के बारे में स्पष्टीकरण मांगा है। घरेलू उद्योग ने आयात आंकड़ों के विश्लेषण और आयातों की मात्रा एवं मूल्य के निर्धारण हेतु अपनाई कार्यप्रणाली का उल्लेख करते हुए एक नोट उपलब्ध कराया है। इसे सार्वजनिक फाइल के जरिए हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया गया था।

च. यह स्पष्ट किया जाता है कि आयातों की मात्रा और मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने आईबीआईएस के आंकड़े स्वीकार किए हैं क्योंकि आईबीआईएस ने डीजीसीआई एंड एस की तुलना में आयात की काफी अधिक मात्रा दर्शाई है।

छ. प्राधिकारी ने आयात आंकड़ों का सत्यापन किया है और यह पाया है कि याचिकाकर्ता ने कोई परिवर्तन नहीं किया है। जिसे कुछेक आयात सौदे हैं जिनमें उत्पाद विवरण को "फ्रांस" दर्शाया गया है परंतु उद्गम का देश यूएई अथवा चीन बताया गया है। इन आयातों को वर्तमान प्रयोजनार्थ संबद्ध देशों में शामिल किया जाना चाहिए था।

ज. प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा किए गए लाभप्रवता के दावे का विधिवत सत्यापन किया है और ऐसे सत्यापित दावों के आधार पर, प्रारंभिक जांच परिणाम तथा वर्तमान जांच परिणाम दर्ज किए हैं। यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता अन्य उत्पादों का भी उत्पादन कर रहा है।

झ. जहां तक मालसूची के मूल्यांकन का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने यह दर्शाते हुए पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किया है कि मालसूची के उसके मूल्यांकन में बिक्री, सामान्य एवं प्रशसनिक लागत तथा ब्याज लागत सहित उत्पादन की सम्पूर्ण लागत शामिल नहीं है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि वार्षिक रिपोर्ट में यह उल्लेख नहीं है कि सांविधिक लेखापरीक्षकों ने यह राय दी है कि मालसूची का मूल्यांकन लेखा मानकों के असंगत है।

ज. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता कम्पनी एकल उत्पाद कम्पनी नहीं है। इसने अन्य प्रचालनों यथा पवन चक्की प्रचालन से भी राजस्व एवं लाभ कमाया है।

ट. आयातकों की ओर से यह तर्क दिया गया है कि याचिकाकर्ता के साथ दायर किए जाने वाले आवश्यक दस्तावेजों में से एक दस्तावेज (अर्थात् वार्षिक रिपोर्ट) उन्हें 8 अगस्त 2011 को (अर्थात् जांच शुरूआत के 11 माह तथा 12 दिन बाद) उपलब्ध करवाया गया था। आगे यह तर्क दिया गया है कि इतनी देर से दायर की गई ऐसी सूचना पर टिप्पणियां देने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को अवसर प्रदान नहीं किया गया था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने आवंदन के साथ जांच अवधि के लिए संगत सूचना दायर की थी।

तथापि आयातकों ने स्वयं जांच के काफी बाद कार्यवाही में भाग लिया था। वर्तमान मामले में जांच दिनांक 26 अगस्त, 2010 की अधिसूचना द्वारा शुरू की गई थी और आयातक ने काफी देर से दिनांक 28.07.2011 को अर्थात् जांच शुरूआत की तारीख से 11 माह बाद और प्रारंभिक जांच परिणाम जारी होने के बाद प्राधिकारी को पहली बार उतर दिया था। इसके अलावा याचिकाकर्ता ने याचिका दायर करने के समय अपना अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराया था जिसकी प्रति सार्वजनिक फाइल के जरिए हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराई गई थी और एक प्रति जांच शुरूआत संबंधी सूचना के साथ विदेशी उत्पादकों को भेजी गई थी। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने तक याचिकाकर्ता की वार्षिक रिपोर्टों के बारे में मुद्दा नहीं उठाया था।

ठ. मूल्यानुसार शुल्क की घरेलू उद्योग के अनुरोध पर इस जांच परिणाम के संगत भाग में विचार किया गया है।

#### ख. विचाराधीन उत्पाद

13. इस जांच में विचाराधीन उत्पाद सभी प्रकार के ओपल ग्लासवेयर हैं। ओपल ग्लास एक दूधिया सफेद ग्लास होता है जिसका उपयोग फिक्चर्स एवं टेबलवेयर में किया जाता है। यह ग्लास रोशनी का विकीर्ण करता है जिससे ओपल ग्लासवेयर आकर्षक लगते हैं। ओपल ग्लासवेयर के विनिर्माण के लिए ओपल ग्लास के उत्पादन हेतु सैंड/क्वार्ट्ज, लाइम, डोलोमाइट, ट्रौना, आर्थोक्लास, बोरेक्स, एल्बाइट का उपयोग किया जाता है। विचाराधीन उत्पाद का उपयोग चाय, कॉफी, सूप तथा अल्पाहार सहित सामान्य खाद्य सामग्री परोसने के लिए किया जाता है।

14. ओपल ग्लासवेयर को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अंतर्गत सीमाशुल्क उपशीर्ष सं० 7013 के तहत वर्गीकृत किया गया है। तथापि यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और किसी भी प्रकार से वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

15. हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि ओपल ग्लासवेयर का उत्पादन दो प्रौद्योगिकियों-प्रेस तथा स्पिन प्रौद्योगिकी से किया जाता है जिसे दो अलग उत्पादों का उत्पादन होता है। प्रैस प्रौद्योगिकी के जरिए उत्पादित वस्तु का ही जांच अवधि के दौरान भारत में आयात किया गया है और इसलिए विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को केवल प्रैस प्रौद्योगिकी के उत्पाद तक सीमित रखा जाना चाहिए। हितबद्ध पक्षकारों ने आगे यह तर्क दिया है कि यदि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में दोनों प्रकार शामिल किए जाते हैं तो पाटन (और परिणाम क्षति) के प्रयोजनार्थ तुलना तुलनीय प्रौद्योगिकी पर विचार करने के बाद की जानी चाहिए।

16. घरेलू उद्योग ने आयातकों के दावे का खंडन किया है और यह तर्क दिया है कि दोनों प्रौद्योगिकियों के जरिए उत्पादित वस्तु समान उत्पाद होती है और घरेलू उद्योग तथा संबद्ध देशों द्वारा दोनों प्रौद्योगिकियों के जरिए वस्तु का उत्पादन किया जा रहा है। घरेलू उद्योग ने आगे यह तर्क दिया है कि प्रौद्योगिकी में अंतर से उत्पाद अलग-अलग नहीं होते हैं।



17. प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के बारे में हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों की जांच की है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग और चीन जन.गण. के प्रतिवादी निर्यातक के परिसरों में मौके का सत्यापन भी किया है। इस संबंध में प्राधिकारी का प्रस्ताव निम्नानुसार मानने का है :

- क. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सभी प्रकार के ओपल ग्लासवेयर हैं। सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत उत्पाद को टेबल, रसोई, टायलेट, कार्यालय, आंतरिक साजसज्जा अथवा इसी प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त स्वरूप के ग्लासवेयर (सामान्य तौर पर) के रूप में वर्णित किया गया है। तथापि, वर्तमान जांच का क्षेत्र टेबल, रसोई और कार्यालय में प्रयुक्त स्वरूप के ओपल ग्लासवेयर तक सीमित रखा गया है।
- ख. ओपल ग्लासवेयर का उत्पादन दो प्रौद्योगिकियों अर्थात् स्पिन (सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस) और प्रेस प्रौद्योगिकी (डाई कास्टिंग प्रोसेस) के जरिए किया जाता है। प्रेस प्रौद्योगिकी पुरानी है और स्पिन प्रौद्योगिकी नई है। पूर्ववर्ती प्रक्रिया के जरिए विनिर्मित उत्पाद वजन में हल्के और उच्च गुणवत्ता के होते हैं तथा परवर्ती प्रक्रिया से विनिर्मित उत्पादों की तुलना में अधिक चमकदार होते हैं। तथापि, दोनों प्रौद्योगिकियों में अंतर से दोनों उत्पाद असमान उत्पाद नहीं बनते हैं। दोनों प्रौद्योगिकियों के जरिए उत्पादित वस्तु ओपल ग्लासवेयर है और उसका समान उपयोग होता है।
- ग. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि आयात आंकड़ों से उत्पाद के उत्पादन में अंतर्ग्रस्त सहायक प्रौद्योगिकी का भेद नहीं होती है। चीन जन.गण. के प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक के परिसरों में की गई मौके पर जांच से यह पता चला कि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान दोनों प्रौद्योगिकियों के जरिए विनिर्मित संबद्ध वस्तु का उत्पादन किया है और भारत को उसका निर्यात किया है। घरेलू उद्योग भी दोनों प्रौद्योगिकियों के जरिए वस्तु का उत्पादन कर रहा है। यद्यपि, यू ए ई के उत्पादकों ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के साथ पूर्ण सहयोग नहीं किया था तथापि, उपर्युक्त साक्ष्य से यह पता चलता है कि यू ए ई का उत्पादक भी दोनों प्रौद्योगिकियों के जरिए वस्तु का उत्पादन कर रहा है।
- घ. चूंकि भारत और संबद्ध देशों में वस्तु का उत्पादन दोनों प्रौद्योगिकियों के उपयोग से किया जा रहा है, और चूंकि दोनों प्रौद्योगिकियों के जरिए उत्पादित उत्पाद में अंतर होने से वे अलग-अलग वस्तुएं नहीं बनती हैं इसलिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में दोनों प्रौद्योगिकियों के जरिए उत्पादित ओपल ग्लासवेयर शामिल हैं। जहां तक संबद्ध लागत और कीमत में अत्यधिक अंतर का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु केवल उचित तुलना के प्रयोजनार्थ ही संगत है।
- ड प्राधिकारी नोट करते हैं कि अलग-अलग प्रकार के ग्लास वेयर सी.शु. उप शीर्ष सं. 7013 में वर्गीकरणीय हैं। तथापि, वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र टेबल, रसोई, कार्यालय या ऐसे ही प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त स्वरूप के "ओपल ग्लासवेयर" तक सीमित हैं। यह स्पष्ट किया जाता है कि सी.शु. उपशीर्ष सं. 7013 के अंतर्गत आने वाले अन्य सभी उत्पाद वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद के दायरे में नहीं आते हैं।

## ग. समान वस्तु

18. समान वस्तु के संबंध में, पाटनरोधी नियम के नियम 2(घ) में निम्नानुसार प्रावधान किया गया है:-

"समान वस्तु" का अर्थ एक ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटन के लिए जांच के अधीन वस्तु के समान हो या प्रत्येक दृष्टि से उसके जैसी हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य ऐसी वस्तु जो यद्यपि प्रत्येक दृष्टि से समान न हो तब भी उसमें जांचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती विशेषताएं हो।

19. आवेदक ने दावा किया है कि आवेदक के उत्पाद तथा संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं में कोई ज्ञात अंतर नहीं है तथा दोनों ही उत्पाद वास्तविक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसे मानदण्डों के संदर्भ में तुलनीय है। आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं तथा संबद्ध देशों से आयातित वस्तुओं के बीच कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है तथा दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपयोक्ता दोनों ही उत्पादों को अदल-बदल कर प्रयोग में लाते हैं।

20. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं वास्तविक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसे मानदण्डों के संदर्भ में संबद्ध देशों से आयातित उत्पादों के समान उत्पाद हैं।

21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के बारे में एक मुद्दा यह उठाया गया है कि ओपल ग्लासवेयर का विनिर्माण दो प्रकार की प्रौद्योगिकी प्रक्रियाओं अर्थात्- डाई कास्टिंग प्रोसेस एवं सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस के उपयोग से किया जाता है। सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस द्वारा विनिर्मित उत्पाद हल्के और अच्छी गुणवत्ता वाले तथा डाई कास्टिंग प्रोसेस से विनिर्मित उत्पादों की तुलना में अधिक चमकदार होते हैं। दोनों प्रौद्योगिकियों द्वारा विनिर्मित वस्तुओं में अलग-अलग विनिर्माण लागत तथा बाजार मूल्य होता है। तथापि, चूंकि दोनों प्रकार की वस्तुएं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और उनका सामान्य उपयोग होता है, इसलिए उन्हें समान उत्पाद माना जा रहा है। पाटन एवं क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु उचित तुलना के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी का प्रस्ताव उन पर अलग रूप में विचार करने का है।

## घ. घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र एवं स्थिति

22. पाटनरोधी नियमों, के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब

ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा ।

23. यह आवेदन घरेलू उद्योग के रूप में मै0 ला ओपाला आर जी लि0 द्वारा दायर किया गया है। उपलब्ध कराए गए साक्ष्य के अनुसार आवेदक संबद्ध वस्तुओं का प्रमुख उत्पादक है और ओपल ग्लासवेयर के कुल भारतीय उत्पादन में उसका प्रमुख हिस्सा है । अतः याचिकाकर्ता नियमों के अंतर्गत अपेक्षा को पूरा करते हैं और नियम 2(ख) के अर्थों के भीतर घरेलू उद्योग हैं ।

ड. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन

चीन जन.गण. के निर्यातकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार

24. जांच शुरू करते समय प्राधिकारी ने पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ नियमों के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसार चीन जन.गण. को बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानते हुए कार्यवाही शुरू की थी । जाँच करते समय प्राधिकारी ने देश के उत्पादकों/निर्यातकों को जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना का उत्तर देने और उनके बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के निर्धारण के लिए संगत सूचना उपलब्ध कराने की सलाह दी थी ।

25. प्राधिकारी ने नियमों के अनुबंध-1 के पैरा 8(3) में निर्धारित मानदण्डों के अनुसार गैर बाजार अर्थव्यवस्था के पूर्वानुमान का खण्डन करने के लिए सभी ज्ञात निर्यातकों को एमईटी प्रश्नावली की प्रतियां भेजी थीं । प्राधिकारी ने चीन जन.गण. की सरकार से अपने देश के उत्पादकों/निर्यातकों को सूचना उपलब्ध कराने की सलाह देने का भी अनुरोध किया था ।

26. मै0 वेंझौऊं हुईशुंदा इंडस्ट्रियल ट्रेड कं.लि., चीन जन.गण. ने एमईटी प्रश्नावली का उत्तर दिया है । निर्यातक द्वारा निम्नलिखित निवेदन किए गए हैं :-

### निर्यातक द्वारा किए गए निवेदन

27. निर्यातक ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

(क) वर्ष 1996 में स्थापित कम्पनी हुईशुंदा शुरू से ही एक निजी स्वामित्व तथा सीमित दायित्व वाली कम्पनी है । कम्पनी के शेयर धारकों में तीन निजी व्यक्ति शामिल हैं । कम्पनी की कोई भी मूल कम्पनी अथवा उससे संबद्ध सहायक कम्पनियां नहीं है ।

(ख) हुई शुंदा एक सीमित दायित्व वाली कम्पनी है जो चीन जनवादी गणराज्य के कम्पनी कानून के अनुसार स्थापित की गई है और बाजार नियमों के अनुसार अपना प्रचालन करती है;

हुईशुंदा तथा राष्ट्रीय प्रांतीय एवं स्थानीय सरकारों एवं इन सरकारों के मंत्रालयों अथवा कार्यालयों के बीच कोई संबंध नहीं है ।

- (ग) हुईशुंदा स्वतंत्र रूप से संबद्ध पण्य वस्तु का उत्पादन करता है एवं भारत को उसका निर्यात करता है । संबद्ध पण्य वस्तु के अन्य उत्पादकों अथवा निर्यातकों के साथ हुईशुंदा का कोई संबंध नहीं है ।
- (घ) हुईशुंदा संबद्ध पण्यवस्तु के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों पर मालिकाना अधिकार नहीं रखता है अथवा उनको नियंत्रित नहीं करता है ।
- (ङ.) व्यापार लाइसेंस में प्रचालन संबंधी एक शर्त निहित है जिसके अनुसार व्यापार लाइसेंस की वैधता अवधि के समाप्त होने के पश्चात यदि शेषधारक अनुबंध की अवधि को बढ़ाना चाहते हैं तो वे वैधता अवधि के समाप्त होने के छह माह पूर्व अनुमोदन प्राधिकारी को आवेदन करेंगे और संबद्ध प्राधिकारी द्वारा अनुमोदन प्रदान किए जाने के पश्चात व्यापार लाइसेंस का नवीकरण किया जाएगा ।
- (चं) भारत अथवा अन्य देशों को पण्य वस्तु के निर्यातों पर इसका कोई नियंत्रण नहीं है ।
- (छ) निर्यात प्रावधान अथवा निर्यात लाइसेंसिंग के संबंध में संबद्ध वस्तु, किसी भी सरकारी सूची में मौजूद नहीं है ।
- (ज) उत्पादों के विकास का कार्य कम्पनी के तकनीकी एवं अनुसंधान विभाग द्वारा स्वतंत्र रूप से किया जाता है । बिक्री विभाग द्वारा उत्पाद की बिक्री का ऑर्डर स्वीकार किए जाने के पश्चात, उत्पादन विभाग, कम्पनी में संगत विभाग को विनिर्माण योजना के बारे में दिशा-निर्देश देगा ।
- (झ) हुईशुंदा आपूर्तिकर्ताओं के साथ मोल-भाव करने के पश्चात मुक्त बाजार से कच्ची सामग्री की खरीद करता है और प्रमुख निविष्टियों की कीमतों का निर्धारण बाजार मूल्य के अनुसार किया जाता है ।
- (ञ.) हुईशुंदा भारत एवं घरेलू बाजार दोनों में वितरकों को उत्पाद की बिक्री करता है । कच्ची सामग्री के आपूर्तिकर्ता, घरेलू अथवा निर्यात ग्राहकों के साथ कम्पनी का किसी प्रकार का अनन्य संबंध अथवा संबद्धता नहीं है ।
- (ट) संस्था अंतर्नियमों के अनुसार महाप्रबंधक की नियुक्ति कार्यकारी निदेशक द्वारा की जाती है। अन्य वरिष्ठ प्रबंधकों की नियुक्ति महाप्रबंधक द्वारा की जाती है । निदेशकों/प्रबंधकों की

नियुक्ति के विषय में किसी सरकारी प्राधिकरण को अधिसूचित करने की आवश्यकता नहीं होती है ।

### याचिकाकर्ता के निवेदन

27. घरेलू उद्योग द्वारा यह तर्क दिया गया है कि निम्नलिखित तथ्यों के मद्देनजर चीन जन.गण. को गैर बाज़ार अर्थव्यवस्था वाला देश क्यों नहीं माना जाना चाहिए:-

- (i) एमईटी प्रश्नावली में विभिन्न प्रश्नों के उत्तर अत्यंत गूढ़ तथा अपर्याप्त हैं ।
- (ii) प्रश्न 2घ के उत्तर में शेयर धारकों की सूची के संबंध में कम्पनी द्वारा कहा गया है कि कम्पनी के तीन शेयर धारकों में से दो निजी व्यक्ति हैं । तीसरे शेयर धारक की स्थिति प्रकट नहीं की गई है और इसका कारण भी प्रस्तुत नहीं किया गया है ।
- (iii) प्रश्न सं. 2ज में यह कहा गया है कि कम्पनी का कोई निदेशक मण्डल नहीं है । चीन के कम्पनी कानून के तहत गठित कम्पनी का निदेशक मण्डल कैसे मौजूद नहीं है जबकि कानून के तहत कम्पनी के गठन के लिए यह एक अनिवार्य अपेक्षा है । इस आधार पर, एमईटी प्रदान नहीं किया जाना चाहिए ।
- (iv) प्रश्न सं.5 (छ) के उत्तर में यह कहा गया है कि वर्तमान वर्ष में कर लाभ के पश्चात हुईशुंदा कम्पनी के संवैधानिक आरक्षित निधि के रूप में लाभ का 10% तथा संवैधानिक कल्याण निधि हेतु 5-10% प्राप्त करता है । यदि संवैधानिक आरक्षित निधि पूर्ववर्ती वर्ष में कम्पनी को हुई हानि को कवर करने के लिए पर्याप्त नहीं है, तो वर्तमान वर्ष के लाभ को संवैधानिक आरक्षित एवं कल्याण निधि हेतु आवंटित करने से पूर्व ऐसी हानियों की कवर करने के लिए उपयोग में लाया जाता है । क्या निधि का यह आवंटन तथा पुनर्आवंटन चीन के जीएएपी के अनुरूप है जैसाकि कम्पनी द्वारा दावा किया जा रहा है?
- (v) प्रश्न सं. 5(ज) के उत्तर में यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि उन्हें निर्यात बिक्री में घाटा हुआ है परंतु इसका कोई कारण प्रस्तुत नहीं किया गया है । आगे पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष की हानियों की क्षतिपूर्ति होने पर कम्पनी लाभों का वितरण करेगी । अतः एमईटी प्रदान नहीं किया जाना चाहिए ।
- (vi) हुईशुंदा द्वारा अधिप्राप्त मशीनरी एवं अन्य चल परिसंपत्तियों के स्रोत के संबंध में कोई सूचना नहीं दी गई है ।

- (vii) एमईटी के संबंध में अपूर्ण उत्तर के मद्देनजर, उनके एमईटी दावों को खारिज किया जाना चाहिए ।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

29. प्रारंभिक जांच परिणाम में प्राधिकारी ने इंगित किया था कि आवेदक ने नियमों के अनुबंध-1 के पैरा 7 में निहित प्रावधानों के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण का दावा किया है । चीन जन.गण. के ज्ञात निर्यातकों को सामान्य मूल्य के पूर्वानुमान का खण्डन करने के लिए अवसर भी प्रदान किया गया था ।

30. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-1 के पैरा 8 के अनुसार यदि चीन जन.गण. के निर्यातक (निर्यातकों) द्वारा निम्नानुसार सूचीबद्ध पैरा 8 के उप पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदण्डों के आधार पर सूचना एवं पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराया जाए और उसके विपरीत तथ्यों को स्थापित किया जाए तो उस स्थिति में गैर बाजार अर्थव्यवस्था के संबंध में पूर्वानुमानों का खण्डन किया जा सकता है ।

- (क) कीमत, कच्ची सामग्री सहित लागत एवं निविष्टियां, प्रौद्योगिकी एवं श्रम की लागत, उत्पादन, बिक्री एवं निवेश के संबंध में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों के निर्णय, इस संबंध में राज्य के किसी उल्लेखनीय हस्तक्षेप के बिना तथा इस पर ध्यान न देते हुए कि प्रमुख निविष्टियों की लागतें पर्याप्त रूप से बाजार मूल्यों को प्रतिबिंबित कर रही हैं या नहीं, आपूर्ति एवं मांग को दर्शाते हुए बाजार संकेतकों के अनुसार लिए जाते हैं;
- (ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागतें तथा वित्तीय स्थिति पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली विशेष रूप से परिसंपत्तियों के अवमूल्यन, अन्य बटटे-खाते, विनिमय व्यापार तथा ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संबंध में पहले से चली आ रही बड़ी विसंगतियों के अध्यधीन होती हैं;
- (ग) ऐसी कंपनियाँ दिवालियापन तथा संपत्ति संबंधी विधानों के अध्यधीन होती हैं जो उनके प्रचालन के लिए कानूनी सुनिश्चितता एवं स्थिरता का जिम्मा लेते हैं ।
- (घ) विनिमय दर संबंधी अंतरण बाजार दर के अनुसार किए जाते हैं ।

31. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. कं. लि. को छोड़कर चीन के किसी अन्य निर्यातक ने न तो बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली सहित निर्यात प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं और न ही गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की अवधारणा का खण्डन किया है । वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. कं. लि. ने निर्यातक प्रश्नावली के साथ-साथ बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार संबंधी प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है जिसकी प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है ।

32. प्राधिकारी ने अब चीन जन.गण. में कंपनी के सत्यापन दौरे के दौरान वेनझोऊ हुईशुडा इंड ट्रेड कंपनी लि. द्वारा एम ई टी प्रश्नावली में प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया है। उक्त सत्यापन से प्राधिकारी निम्नानुसार नोट करते हैं :-

- (क) मूलतः कंपनी वर्ष 1994 में हुईशुडा हाउसहोल्ड एप्लाइंसेज कंपनी लि. के रूप में निगमित हुई थी।
- (ख) निर्यातक कंपनी अर्थात् वेनझोऊ हुईशुडा इंड ट्रेड कंपनी लि. के नाम से पंजीकरण में परिवर्तन वर्ष 1997 में हुआ था।
- (ग) पुरानी कंपनी की पंजीकृत पूंजी मूलतः \*\*\* आर एम बी थी और चार शेयरधारकों ने निवेश में योगदान किया था। 26 अगस्त, 2002 की स्थिति के अनुसार परिवर्तन के बाद कंपनी की पंजीकृत संचित पूंजी \*\*\* मिलियन आर एम बी थी नई कंपनी के संस्था के अंतर्नियम वर्ष 2002 में अधिनियमित हुए थे और कंपनी की पंजीकृत पूंजी बढ़ाकर \*\*\* मिलियन आर एम बी कर दी गई थी जिसका योगदान 3 शेयरधारकों ने किया था जो पुरानी कंपनी अर्थात् हुईशुडा हाउसहोल्ड एप्लाइंसेज कंपनी लि. के शेयर भी धारण कर रहे थे।
- (घ) निर्यातक कंपनी हेतु संस्था के वर्तमान अंतर्नियम वर्ष 2004 में अधिनियमित किए गए थे, जिनमें संस्था के अंतर्नियम, 2002 के अनुसार, \*\*\* मिलियन आर एम बी की उतनी ही पंजीकृत पूंजी और उतने ही योगदान वाले वे ही शेयरधारक थे। तथापि, संवर्धित पंजीकृत पूंजी के लिए शेयरधारकों के बारे में पूंजी योगदान प्रमाणपत्र कंपनी उपलब्ध नहीं करा सकी क्योंकि उन्हें अब तक जारी नहीं किया गया था।
- (ङ) वर्ष 1994 (पुरानी कंपनी की स्थापना की तारीख जिसमें से वर्तमान कंपनी स्थापित हुई), के लिए स्थायी परिसंपत्ति रजिस्टर सत्यापन दल को उपलब्ध नहीं कराया जा सका। इसके अलावा, पुरानी कंपनी के संबंध में लेखा परीक्षक की रिपोर्ट और अन्य संगत दस्तावेज सत्यापन हेतु उपलब्ध नहीं कराए गए थे।
- (च) इसके अलावा, \*\*\* आर एम बी की मूल पंजीकृत पूंजी के संबंध में पूंजी सत्यापन रिपोर्ट उपलब्ध नहीं कराई गई थी। अतः पुरानी कंपनी की स्थायी परिसंपत्तियों के स्रोत का सत्यापन नहीं किया गया था। पुरानी कंपनी और नई कंपनी के बीच संक्रमण अवधि के लिए अन्य संगत दस्तावेज भी सत्यापन हेतु उपलब्ध नहीं कराए गए थे।
- (छ) सत्यापन के दौरान यह पाया गया था कि निर्यातक ने चीन के स्थानीय बाजार से बोरेक्स को छोड़कर प्रमुख कच्ची सामग्री की खरीद की थी। यह दर्शाने के लिए कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया था कि प्रमुख निविष्टियों की कीमत में बाजार मूल्य का पर्याप्त प्रदर्शन होता है।

33. उपर्युक्त के मद्देनजर और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि पुरानी कंपनी अर्थात् हुईशुडा हाउसहोल्ड एप्लाइंसेज कंपनी लि. जिसमें से वर्तमान निर्यातक कंपनी स्थापित हुई है, के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के समर्थन में महत्वपूर्ण रिकॉर्ड/दस्तावेज प्राधिकारी को उपलब्ध नहीं कराए गए हैं, यह निर्णय लिया गया है कि वेनझोऊ हुईशुडा इंड ट्रेड कंपनी लि. को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान न किया जाए। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने चीन जन.गण. में सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 के उपबंध के अनुसार कार्यवाई की है।

### ड.3 चीन जन. गण. के मामले में सामान्य मूल्य के परिकलन हेतु अपनाई गई कार्य पद्धति

34. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में निम्नानुसार प्रावधान है :

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहाँ यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहाँ उचित हो उचित समय सीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी।

35. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में परिकलित मूल्य हेतु संगत सूचना प्रस्तुत नहीं की है क्योंकि वह उपलब्ध नहीं है। प्रचलित प्रथा के अनुसार प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण की वैकल्पिक पद्धतियों से संबंधित संगत सूचना के अभाव में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के मामले में सामान्य मूल्य के परिकलन का सहारा लिया है। तदनुसार, प्राधिकारी का प्रस्ताव चीन जन. गण. में सभी उत्पादकों हेतु निम्नलिखित आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन करने का है :-

- (क) बोरेक्स, बोरिक एसिड, सोडा ऐश जैसी प्रमुख निविष्टियों की कीमतों का निर्धारण अंतर्राष्ट्रीय कीमतों अर्थात् वर्ल्ड ट्रेड एटलस के अनुसार चीन को वैश्विक निर्यात कीमत के आधार पर किया गया है।
- (ख) प्रति इकाई के उत्पादन हेतु कच्ची सामग्री की खपत का निर्धारण घरेलू उद्योग के उत्पादक की सूचना/आंकड़ों के आधार पर किया गया है।
- (ग) परिवर्तन लागतों का निर्धारण घरेलू उद्योग के उत्पादक की सूचना/आंकड़ों के आधार पर किया गया है।
- (घ) बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक लागतों (ब्याज लागतों सहित) का परिकलन घरेलू उद्योग के उत्पादक की सूचना/आंकड़ों के आधार पर किया गया है।
- (ङ) लाभ को कारखाना द्वार लागत के 5% की दर से जोड़ा गया है जिसमें ब्याज को शामिल नहीं किया गया है।



36. तदनुसार, चीन जन. गण. के सभी निर्यातकों के लिए ओपल ग्लास वेयर के सामान्य मूल्य का निर्धारण \*\*\* अम. डॉलर/कि.ग्रा. (डाई कास्टिंग प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों के लिए) और \*\*\* अम. डॉ./किग्रा. (सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों के लिए) के रूप में किया गया है।

### यूआई में सामान्य मूल्य

37. प्राधिकारी ने यूआई में विचाराधीन उत्पाद के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को निर्धारित प्रपत्र में एवं निर्धारित ढंग से अपने उत्तर प्राधिकारी को प्रेषित करने की सलाह देते हुए एक पत्र भेजा था। यूआई के ज्ञात निर्यातकों को प्रेषित इस पत्र की एक प्रति यूआई की सरकार को भी भेजी गई थी। तथापि, यूआई में इस उत्पाद के किसी भी उत्पादक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। घरेलू उद्योग ने यह सूचित किया है कि उन्होंने यूआई के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमतों के बारे में सूचना/साक्ष्य जुटाने का प्रयास किया था। घरेलू उद्योग यूआई के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमतों से संबंधित सूचना/साक्ष्य जुटाने में असमर्थ रहा है। इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। अतः प्राधिकारी ने यूआई में उत्पादकों/निर्यातकों हेतु सामान्य मूल्य का परिकलन निम्नलिखित आधार पर किया है :

- क) बोरेक्स, बोरिक एसिड, सोडा ऐश जैसी प्रमुख निविष्टियों की कीमतों का निर्धारण अंतर्राष्ट्रीय कीमतों अर्थात् वर्ल्ड ट्रेड एटलस के अनुसार चीन को वैश्विक निर्यात कीमत के आधार पर किया गया है क्योंकि संगत अवधि के लिए यूआई के संबंध में यह सूचना उपलब्ध नहीं है।
- ख) प्रति इकाई के उत्पादन हेतु कच्ची सामग्री की खपत पर रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना/आंकड़ों के आधार पर विचार किया गया है।
- ग) परिवर्तन लागतों पर रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना/आंकड़ों के आधार पर विचार किया गया है।
- घ) बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक लागतों (ब्याज लागतों सहित) पर रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना/आंकड़ों के आधार पर लिया गया है।
- ड.) लाभ को कारखाना द्वार लागत के 5% की दर से जोड़ा गया है जिसमें ब्याज को शामिल नहीं किया गया है।

38. तदनुसार, यू ए ई के सभी निर्यातकों के लिए ओपल ग्लास वेयर के सामान्य मूल्य का निर्धारण \*\*\* अम. डॉलर/कि.ग्रा. (डाई कास्टिंग प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों के लिए) और \*\*\* अम. डॉ./किग्रा. (सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों के लिए) के रूप में किया गया है। तथापि, यूआई के संबंध में दोनों उत्पादों की अलग-अलग निर्यात कीमत के अभाव में प्राधिकारी ने XXX अम.डॉ./किग्रा. के औसत सामान्य को स्वीकार किया है।

## 1) निर्यात कीमत

चीन जन. गण.

मै. वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. कं. लि., चीन जन. गण.

39. मै. ह्यूईशंदा, चीन ने निर्धारित प्रपत्र एवं ढंग से दिए गए निर्यातक प्रश्नावली के अपने उत्तर में भारत को किए गए निर्यातों से संबंधित सौदा-वार सूचना प्रस्तुत की है। इस सूचना का विधिवत सत्यापन किया गया है। ऐसे 28 बीजक हैं, जिनमें जांच अवधि के दौरान कंपनी द्वारा भारत को निर्यात बिक्री दर्शायी गई है और इन सौदों का मूल रिकॉर्डों तथा संगत निर्यात दस्तावेजों से विधिवत सत्यापन किया गया है। कंपनी ने जांच अवधि के दौरान \*\*\* अम.डॉ. (बीजक मूल्य) मूल्य की स्पिन प्रौद्योगिकी (सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस) के जरिए विनिर्मित वस्तु सहित भारत को कुल \*\*\* कि ग्रा संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कुछ सौदों में भारत को निर्यात बिक्री एफ ओ बी आधार पर है और कुछ सौदों में सी आई एफ आधार पर। निर्यातक द्वारा समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, अंतरदेशीय भाड़े, पत्तन प्रभारों तथा सहायक व्यय सहित एकमुश्त व्यय, ऋण लागत और अप्रत्यादेय वैट के संबंध में दावा किए गए समायोजनों का संगत दस्तावेजों से सत्यापन किया गया है। इस प्रकार मै. वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. ट्रेड कं. लि. चीन जन.गण. के लिए निवल निर्यात कीमत अर्थात् कारखाना स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण \*\*\* अम. डॉलर/कि.ग्रा. (डाई कास्टिंग प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों के लिए) और \*\*\* अम. डॉ./किग्रा. (सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों के लिए) के रूप में किया गया है।

असहयोगी निर्यातक

40. चीन जन.गण. के अवशिष्ट श्रेणी के निर्यातकों के बारे में प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान भारत के लिए सहयोगी निर्यातक की प्रतिनिधिक कम कीमत पर विचार किया है। सहयोगी निर्यातक के संबंध में सत्यापित विभिन्न शीर्षों के बारे में समायोजनों पर असहयोगी निर्यातकों के लिए विचार किया गया है। अतः चीन जन.गण. के अवशिष्ट निर्यातकों के लिए निवल निर्यात कीमत का निर्धारण \*\*\* अम. डॉलर/कि.ग्रा. (डाई कास्टिंग प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों के लिए) और \*\*\* अम. डॉ./किग्रा. (सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों के लिए) के रूप में किया गया है।

यू.ए.ई. में निर्यात कीमत

41. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यू.ए.ई. के न तो किसी निर्यातक ने और न ही भारत में संबद्ध वस्तु के किसी आयातक ने भारत के लिए निर्यात कीमत के ब्यौरे देते हुए प्रश्नावली का अपेक्षित उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। यू.ए.ई. से संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/आयातकों से अपेक्षित सूचना के अभाव में प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों के आधार पर यू.ए.ई. के सभी निर्यातकों के लिए \*\*\* अम.डॉ./किग्रा. की निर्यात कीमत (सी आई एफ) स्वीकार की है। चूंकि निर्यातों का डाईकास्टिंग प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों और सेंट्रीफ्यूगल प्रोसेस के जरिए विनिर्मित उत्पादों में विभाजन डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों में उपलब्ध नहीं है इसलिए प्राधिकारी दोनों उत्पादकों के लिए अलग से निर्यात कीमत निकालने की स्थिति में नहीं है। अतः याचिकाकर्ता के दावे के अनुसार भाड़े, बीमा, कमीशन, पत्तन व्यय, अंतरदेशीय भाड़े और बैंक प्रभारों के बारे में \*\*\* अम.डॉ./किग्रा. के समायोजनों को हिसाब में लेने के बाद यू.ए.ई. के सभी

निर्यातकों के लिए सामान्यतः ओपल ग्लासवेयर (प्रेस और स्पिन दोनों उत्पादों) हेतु कारखाना स्तर पर निर्यात कीमत \*\*\* अम.डॉ./कि.ग्रा. निर्धारित की जाती है ।

### पाटन मार्जिन

42. पाटन मार्जिन के निर्धारण से संबंधित नियमों में निम्नानुसार प्रावधान किया गया है :

“ पाटन मार्जिन की गणना के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच समुचित तुलना करेंगे । यह तुलना सामान्यतः कारखाना द्वार स्तर पर, व्यापार के समान स्तर पर और जहाँ तक संभव हो, एक ही समय में की गई बिक्रियों के संदर्भ में की जाएगी । प्रत्येक मामले में उसके गुण-दोषों के आधार पर ऐसे सभी अंतरालों के लिए उचित छूट दी जाएगी जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करते हैं । ऐसे अंतरालों में बिक्री की शर्तों एवं निबंधनों में अंतर, कराधान, व्यापार स्तर, मात्रा, भौतिक विशेषताएँ शामिल हैं जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करते हैं । ”

43. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस आशय का पर्याप्त साक्ष्य कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों द्वारा संबद्ध वस्तु का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि "प्रेस" और "स्पिन" दो अलग-अलग प्रौद्योगिकियाँ हैं जिससे लागत, गुणवत्ता और कीमत में काफी अंतर वाले दो अलग उत्पाद उत्पादित होते हैं, प्राधिकारी ने डाई कास्टिंग (प्रेस प्रौद्योगिकी) प्रक्रिया तथा सेंट्रीफ्यूगल (स्पिन प्रौद्योगिकी) प्रक्रिया के जरिए विनिर्मित संबद्ध वस्तु के बारे में उपर्युक्तानुसार निर्धारित कारखाना स्तर पर सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत की पृथक तुलना करना उचित समझा है । तदनुसार संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का परिकलन निम्नानुसार किया गया है :-

| देश         | उत्पादक/निर्यातक                                   | उत्पाद प्रकार  | सामान्य मूल्य<br>अम.<br>डॉ./<br>कि.ग्रा. | निर्यात कीमत<br>अम.<br>डॉ./<br>कि.ग्रा. | पाटन मार्जिन | पाटन मार्जिन रेंज |
|-------------|--|----------------|--|---|--------------|-------------------|
| चीन जन. गण. | मै. वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. ट्रेड कं. लि. (उत्पादक)  | "स्पिन" उत्पाद | ***                                      | ***                                     | ***          | 5-15              |
|             | मै. वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. ट्रेड कं. लि. (निर्यातक) | "प्रेस" उत्पाद | ***                                      | ***                                     | ***          | 50-60             |
|             | अन्य कोई संयोजन                                    | "स्पिन" उत्पाद | ***                                      | ***                                     | ***          | 40-50             |
|             |  | "प्रेस" उत्पाद | ***                                      | ***                                     | ***          | 120-130           |

|      |                       |                              |     |     |     |       |
|------|-----------------------|------------------------------|-----|-----|-----|-------|
| यूएई | सभी उत्पादक/ निर्यातक | दोनों स्विन तथा प्रेस उत्पाद | *** | *** | *** | 35-45 |
|------|-----------------------|------------------------------|-----|-----|-----|-------|

च. घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण और कारणात्मक संबंध की जांच

44. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (iii) के अनुसार यदि एक से अधिक देशों से किसी उत्पाद के आयातों के संबंध में एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही हों तो निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित निर्धारित किए जाने की स्थिति में ऐसे पाटित आयातों के प्रभाव का संचयी रूप से मूल्यांकन किया जाएगा :

(क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2% से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों की 3% से अधिक है अथवा जहां अलग-अलग देशों का निर्यात 3% से कम है वहां आयातों का संचयी हिस्सा समान वस्तु के आयातों के 7% से अधिक है, और

(ख) आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है।

45. इस संबंध में निम्नलिखित बिन्दु संगत हैं :

(क) संबद्ध देशों में से प्रत्येक से पाटन का मार्जिन ऊपर निर्धारित सीमा से अधिक है;

(ख) आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन समुचित है क्योंकि संबद्ध देशों द्वारा निर्यातित वस्तु भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु से सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं जैसा कि निम्नलिखित सूचना से स्पष्ट है :

क. संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्मित उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद के गुणधर्म परस्पर तुलनीय हैं। दूसरे शब्दों में विभिन्न संबद्ध देशों और घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्त वस्तुएँ परस्पर समान वस्तुएँ हैं।

ख. आयातित एवं घरेलू सामग्रियों का इस्तेमाल परस्पर एक-दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है और घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के बीच सीधी प्रतिस्पर्धा है।

ग. संबद्ध देशों से आयातित ऐसी सामग्री का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है। इससे विदेशी उत्पादकों और घरेलू उत्पादकों के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा का स्पष्ट संकेत मिलता है।

घ. संबद्ध देशों के निर्यातकों और घरेलू उद्योग ने एक ही अवधि में समान उपभोक्ताओं को समान उत्पाद की बिक्री की है। याचिकाकर्ता और संबद्ध देशों के निर्यातक

अपने उत्पादों की बिक्री सीधे करने के साथ-साथ अपने-अपने एजेंटों के जरिए भी उनकी बिक्री करते रहे हैं। बिक्री के माध्यम परस्पर तुलनीय हैं।

ड. संबद्ध देशों में से प्रत्येक से आयातों की मात्रा अत्यधिक है।

च. घरेलू उत्पादक और संबद्ध देशों के निर्यातक एक ही श्रेणी के उपभोक्ताओं को समान उत्पाद की बिक्री कर रहे हैं और दोनों ही समान बाजार में परस्पर प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। उपभोक्ताओं द्वारा दोनों उत्पादों का इस्तेमाल परस्पर अदल-बदल कर किया जा रहा है।

46. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आयातित उत्पादों और समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के आलोक में घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु पर चीन जन. गण. और यूएई से आयातित संबद्ध वस्तु के आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन करना समुचित है।

47. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह उपबंध है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।”

48. जहाँ तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार प्रावधान किया गया है।

“संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।”

49. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा और पाटन का मार्जिन ऊपर निर्धारित सीमा से अधिक हैं। आयातों के प्रभाव का संचयी रूप से मूल्यांकन करना उचित है क्योंकि संबद्ध देशों की निर्यात कीमतें भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों से प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा कर रही थी।

50. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II (iv) के अनुसार उद्योग की स्थिति पर उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री आय, पाटन की मात्रा एवं मार्जिन आदि जैसे संकेतकों पर विचार किया है।

#### क. आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

51. नीचे दी गई तालिका में भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों की स्थिति दर्शाई गई है :

| विवरण                          | इकाई     | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|--------------------------------|----------|---------|---------|---------|---------|
| चीन जन. गण. से आयात            | मी. टन   | 174     | 723     | 850     | 1,975   |
| प्रवृत्ति                      | सूचीबद्ध | 100     | 416     | 489     | 1138    |
| यूएई से आयात                   | मी. टन   | 871     | 1,157   | 464     | 584     |
| प्रवृत्ति                      | सूचीबद्ध | 100     | 133     | 53      | 67      |
| अन्य देश                       | मी. टन   | 523     | 753     | 146     | 152     |
| आयात में बाजार हिस्सा-चीन      | %        | 11.11   | 27.45   | 58.24   | 72.86   |
| आयात में बाजार हिस्सा-यूएई     | %        | 55.53   | 43.94   | 31.77   | 21.54   |
| आयात में बाजार हिस्सा-अन्य देश | %        | 33.36   | 28.61   | 9.99    | 5.60    |

52. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि :

- क. क्षति अवधि के दौरान चीन जन. गण. से पाटित आयातों की मात्रा में सापेक्ष रूप से अत्यधिक वृद्धि हुई है;
- ख. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान यूएई से पाटित आयातों की मात्रा में गिरावट आई थी।
- ग. कुल आयातों में चीन जन. गण. तथा यूएई के आयातों का प्रमुख हिस्सा है। क्षति अवधि के दौरान जहाँ आयातों में संबद्ध देशों के हिस्से में वृद्धि हुई थी वहीं दूसरी ओर अन्य देशों के हिस्से में गिरावट आई थी।

#### माँग एवं बाजार हिस्सा

| विवरण                          | इकाई     | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|--------------------------------|----------|---------|---------|---------|---------|
| घरेलू उद्योग की बिक्री (घरेलू) | मी. टन   | 2,367   | 2,456   | 2,573   | 3,390   |
| प्रवृत्ति                      | सूचीबद्ध | 100     | 104     | 109     | 143     |
| संबद्ध देशों से भारत में आयात  | मी. टन   | 1,045   | 1,879   | 1,314   | 2,559   |
| प्रवृत्ति                      | सूचीबद्ध | 100     | 180     | 126     | 245     |
| भारत में माँग                  | मी. टन   | 3,935   | 5,088   | 4,033   | 6,100   |
| प्रवृत्ति                      | सूचीबद्ध | 100     | 129     | 102     | 155     |

| माँग में बाजार हिस्सा  |   |       |       |       |       |
|------------------------|---|-------|-------|-------|-------|
| संबद्ध देश             | % | 26.56 | 36.93 | 32.58 | 41.95 |
| चीन जन. गण.            | % | 4.43  | 14.20 | 21.08 | 32.38 |
| यूएई                   | % | 22.13 | 22.73 | 11.50 | 9.57  |
| अन्य देश               | % | 13.30 | 14.80 | 3.62  | 2.49  |
| घरेलू उद्योग का हिस्सा | % | 60.14 | 48.27 | 63.80 | 55.56 |

53. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि भारत में संबद्ध वस्तु की माँग में वर्ष 2008-09 के दौरान आई गिरावट को छोड़कर वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। तथापि, यह भी देखा जा सकता है कि आधार वर्ष की तुलना में जाँच अवधि के दौरान भारत में उत्पाद की माँग की तुलना में संबद्ध देशों के बाजार हिस्से में अत्यधिक वृद्धि और घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है।

#### ख. आयातों का कीमत प्रभाव

54. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अत्यधिक मात्रा में कीमतों का हास करना या कीमतों में वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा अत्यधिक मात्रा में हुआ होता। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभावों की जाँच कीमत कटौती, कीमत न्यूनीकरण और कीमत हास, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत निवल बिक्री आय (एनएसआर) और गैर-क्षतिकारी कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच लागत से की गई है। निवल बिक्री आय का परिकलन सभी छूटों और करों को घटाने के बाद किया गया था। आयातों के पहुँच मूल्य की गणना संबद्ध आयातों के सीआईएफ मूल्य में 1% प्रहस्तन प्रभार और लागू मूल सीमाशुल्क को जोड़ने के बाद की गई है। आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय से की गई थी और यह पाया गया था कि पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है।

#### कीमत कटौती

55. इस तथ्य की जाँच करने के लिए कि क्या आयातों के परिणामस्वरूप बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, प्राधिकारी ने आयातों की पहुँच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय से की है। प्राधिकारी ने कर एवं शुल्क, बट्टा, छूट एवं कमीशन आदि को छोड़कर बिक्री कीमत को ध्यान में रखते हुए निवल बिक्री आय का निर्धारण किया है। घरेलू उद्योग की समग्र बिक्री मात्रा को इस परिकलन में शामिल किया गया है। आयातों की पहुँच कीमत का निर्धारण 1% लदान प्रभार और लागू मूल सीमाशुल्क सहित भारत औसत सीआईएफ आयात कीमत को ध्यान में रखते हुए किया गया है। निवल बिक्री आय तथा आयातों की पहुँच कीमत के बीच तुलना की गई थी। प्राधिकारी यह नोट

करते हैं कि संबद्ध वस्तु की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम है जिससे यह संकेत मिलता है कि पाटित आयातों के परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत कटौती हुई है।

|                        |              | चीन जन. गण. |         |         |         | यूएई    |         |         |         |
|------------------------|--------------|-------------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| विवरण                  | इकाई         | 2006-07     | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
| पहुँच मूल्य            | रु./कि.ग्रा. | ***         | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     |
| घरेलू उद्योग का एनएसआर | रु./कि.ग्रा. | ***         | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     |
| कीमत कटौती             | रु./कि.ग्रा. | ***         | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     | ***     |
| कीमत कटौती             | %            | 45-55       | 55-60   | 55-60   | 40-45   | 15-20   | 20-25   | 5-10    | 30-35   |

यह देखा गया है कि संबद्ध वस्तु के आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग के बिक्री कीमत से बहुत कम है जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत कटौती हुई है।

#### कीमत न्यूनीकरण

56. इस बात का पता लगाने के लिए कि क्या पाटित आयातों से घरेलू कीमतों का न्यूनीकरण अथवा ह्रास हो रहा है, प्राधिकारी ने इस बात का निर्धारण किया कि क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अत्यधिक मात्रा में कीमतों में वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा बहुत अधिक मात्रा में हुआ होता। इस प्रयोजनार्थ संबद्ध वस्तु की आयात कीमतों की तुलना घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत और बिक्री कीमत की प्रवृत्तियों से की गई है।

| क्र. सं. | विवरण       | इकाई         | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|----------|-------------|--------------|---------|---------|---------|---------|
| 1        | बिक्री लागत | रु./कि.ग्रा. | ***     | ***     | ***     | ***     |
|          | प्रवृत्ति   | सूचीबद्ध     | 100     | 100     | 119     | 137     |
| 2        | बिक्री कीमत | रु./कि.ग्रा. | ***     | ***     | ***     | ***     |
|          | प्रवृत्ति   | सूचीबद्ध     | 100     | 102     | 112     | 116     |

57. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और बिक्री कीमत दोनों में वृद्धि हुई है तथापि बिक्री कीमत में हुई वृद्धि बिक्री लागत में हुई वृद्धि की तुलना में कम है जो कीमत न्यूनीकरण को दर्शाती है।



## ग. घरेलू उद्योग से संबंधित अन्य आर्थिक मापदंड

58. नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। जहाँ तक ऐसे उत्पादकों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली में आगे यह उबंध है कि संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभावों की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में प्राकृतिक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों, नकद प्रवाह, माल सूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदण्डों पर निम्नानुसार चर्चा की गई है :-

## i. उत्पादन, घरेलू बिक्री तथा क्षमता उपयोग

| विवरण            | इकाई     | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|------------------|----------|---------|---------|---------|---------|
| माँग             | मी. टन   | 3,935   | 5,088   | 4,033   | 6,100   |
| प्रवृत्ति        | सूचीबद्ध | 100     | 129     | 102     | 155     |
| संस्थापित क्षमता | मी. टन   | 3,500   | 4,019   | 7,000   | 7,000   |
| प्रवृत्ति        | सूचीबद्ध | 100     | 115     | 200     | 200     |
| उत्पादन          | मी. टन   | 3,052   | 2,885   | 4,965   | 3,825   |
| प्रवृत्ति        | सूचीबद्ध | 100     | 95      | 163     | 125     |
| क्षमता उपयोग     | %        | 87.20   | 71.78   | 70.92   | 54.64   |
| घरेलू बिक्री     | मी. टन   | 2367    | 2456    | 2573    | 3390    |
| प्रवृत्ति        | सूचीबद्ध | 100     | 104     | 109     | 143     |

59. उपर्युक्त से यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि में उत्पादन में घट-बढ़ होती रही है। आधार वर्ष की तुलना में उत्पादन में वृद्धि हुई है। यद्यपि समग्र उत्पादन में आधार वर्ष से 25% और घरेलू बिक्री में इसी अवधि में 43 की वृद्धि प्रदर्शित हुई है तथापि आधार वर्ष की तुलना में बाजार में उत्पादन की मांग में 55% की वृद्धि हुई है। क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई है। तथापि बिक्री में वृद्धि मांग में हुई वृद्धि से आनुपातिक रूप से कम रही है।

## ii. लाभप्रदता

60. घरेलू बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की जांच की गई है। यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि में संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी गिरावट आई है। यह भी नोट किया जाता है कि जांच अवधि में पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में जांच अवधि के दौरान इतनी अधिक गिरावट आई कि घरेलू

उद्योग को अत्यधिक वित्तीय घाटा हो रहा था, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :

| विवरण       | इकाई         | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|-------------|--------------|---------|---------|---------|---------|
| बिक्री लागत | रु./कि.ग्रा. | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति   | सूचीबद्ध     | 100     | 100     | 119     | 137     |
| बिक्री कीमत | रु./कि.ग्रा. | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति   | सूचीबद्ध     | 100     | 102     | 112     | 116     |
| लाभ/हानि    | रु./कि.ग्रा. | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति   | सूचीबद्ध     | 100     | 113     | 73      | -10     |
| लाभ/हानि    | रु. (लाख)    | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति   | सूचीबद्ध     | 100     | 117     | 80      | -15     |

### iii. रोजगार एवं मजदूरी

| विवरण     | इकाई     | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|-----------|----------|---------|---------|---------|---------|
| रोजगार    | सं.      | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100     | 109     | 119     | 117     |
| मजदूरी    | लाख रु.  | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100     | 122     | 140     | 189     |

61. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या और मजदूरी में भी वृद्धि हुई है।

### iv. उत्पादकता

| विवरण                    | इकाई           | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|--------------------------|----------------|---------|---------|---------|---------|
| प्रति कर्मचारी उत्पादकता | कि.ग्रा./ सं.  | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति                | सूचीबद्ध       | 100     | 86      | 137     | 107     |
| प्रति दिवस उत्पादकता     | कि.ग्रा./ दिवस | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति                | सूचीबद्ध       | 100     | 95      | 163     | 125     |

62. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

## v. निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह

63. निवेश पर आय का निर्धारण ब्याज पूर्व लाभ तथा उत्पाद के लिए लगाई गई पूंजी पर विचार करने के बाद किया गया है। नकद प्रवाह पर प्रभाव का निर्धारण मूल्यहास से पूर्व तथा ब्याज लागत के बाद लाभ पर विचार करने के बाद किया गया है। यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि में लगाई गई पूंजी पर आय में भारी गिरावट आई है जैसाकि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट होता है :

| विवरण                              | इकाई         | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|------------------------------------|--------------|---------|---------|---------|---------|
| लाभ/हानि                           | रु./लाख      | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति                          | सूचीबद्ध     | 100     | 117     | 80      | (15)    |
| प्रति इकाई लाभ                     | रु./कि.ग्रा. | ***     | ***     | ***     | ***     |
|                                    |              | 100     | 113     | 73      | -10     |
| मूल्यहास                           | रु./लाख      | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति                          | सूचीबद्ध     | 100     | 220     | 247     | 231     |
| नकद लाभ                            | रु./लाख      | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति                          | सूचीबद्ध     | 100     | 141     | 118     | 41      |
| नकद लाभ प्रति इकाई                 | रु./कि.ग्रा. | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति                          | सूचीबद्ध     | 100     | 136     | 108     | 29      |
| एनएफए आधार पर नियोजित पूंजी पर लाभ | %            | ***     | ***     | ***     | ***     |
| प्रवृत्ति                          | सूचीबद्ध     | 100     | 62      | 55      | 20      |

64. जांच अवधि में नकद लाभ में पर्याप्त तथा काफी अधिक गिरावट आई है। यह नोट किया जाता है कि मूल्य हास में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने इस अवधि में क्षमता बढ़ाई हि जिससे मूल्यहास हुआ है। तथापि, वर्ष 2007-08 के बाद मूल्यहास लगभग उसी सीमा में हुआ है जबकि घरेलू उद्योग के लाभ में तेजी से गिरावट आई है और जांच अवधि में उसे घाटा हुआ है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि लाभ में गिरावट मूल्यहास व्यय में वृद्धि के कारण नहीं आई है।

## vi. मालसूची

| विवरण                | इकाई     | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|----------------------|----------|---------|---------|---------|---------|
| औसत स्टॉक            | मी. टन   | 443     | 528     | 1,234   | 1,844   |
| प्रवृत्ति            | सूचीबद्ध | 100     | 119     | 279     | 417     |
| बिक्री दिवसों के रूप | मी. टन   | 71      | 63      | 205     | 155     |

| में औसत मालसूची |          |       |       |       |       |
|-----------------|----------|-------|-------|-------|-------|
| प्रवृत्ति       | सूचीबद्ध | 100   | 88    | 288   | 218   |
| घरेलू बिक्री    | मी. टन   | 2,367 | 2,456 | 2,573 | 3,390 |
| प्रवृत्ति       | सूचीबद्ध | 100   | 104   | 109   | 143   |

65. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग अपनी वस्तु की बिक्री उसके उत्पादन में हुई वृद्धि के अनुरूप करने में असमर्थ रहा है, इससे मालसूची में वृद्धि हुई है जैसा कि उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि इसमें जांच अवधि में काफी अधिक वृद्धि हुई है। माल जमा हो जाने के कारण घरेलू उद्योग उत्पादन बंद करने के लिए बाध्य हुआ है जो इस तथ्य के बावजूद हुआ है कि उत्पादन प्रक्रिया में उच्च तापमान पर भट्टी चलाना होता है और एक का उत्पादन बंद हो जाने से घरेलू उद्योग पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

### vii. वृद्धि

66. क्षमता उपयोग, मालसूची एवं बाजार हिस्से के संबंध में घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक रही थी जबकि उत्पादन एवं बिक्री के संबंध में यह सकारात्मक थी। तथापि घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान उत्पादन स्थगित करने के लिए बाध्य हुआ है। कीमत मापदण्डों अर्थात् लाभ, नकद लाभ तथा निवेश पर आय के संबंध में वृद्धि नकारात्मक रही है।

### viii. पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

67. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने वर्ष 2007-08 में सितारगंज में एक नया संयंत्र स्थापित करर अपनी क्षमताएँ बढ़ाई हैं जिसके लिए निवेश किया गया है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि क्षमता वृद्धि को देश में उत्पाद की माँग में पर्याप्त वृद्धि के साथ देखना होगा।

### ix. पाटन की मात्रा और पाटन मार्जिन

68. सहयोगी निर्यातक तथा असहयोगी निर्यातकों के संबंध में ऊपर निर्धारित पाटन मार्जिन अत्यधिक तथा न्यूनतम सीमा से अधिक माना गया है।

### क्षति मापदण्डों के बारे में निष्कर्ष

69. अतः यह देखा जाता है कि

क) संबद्ध देशों से आयात में समग्र रूप में वृद्धि हुई है। आयातों में वृद्धि अत्यधिक है।

ख) आयातों में वृद्धि भारत में आयात, भारत में उत्पादन तथा खपत में संबंध में हुई है।

- ग) आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत में भारी कटौती हो रही है ।
- घ) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में वृद्धि हुई है । तथापि, घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत भी बढ़ी है । बिक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्धि से कम रही थी । अतः पाटित आयातों के कारण कीमत न्यूनीकरण हुआ है ।
- ङ.) क्षति अवधि में घरेलू बिक्री में वृद्धि हुई थी तथापि बिक्री में वृद्धि मांग में वृद्धि से कम हुई थी और घरेलू उद्योग के पास भारी मात्रा में माल जमा हो गया था ।
- च) घरेलू उद्योग ने क्षमता वृद्धि की जो देश में उत्पाद की वर्तमान तथा संभावित मांग में वृद्धि के अनुरूप प्रतीत होती है । तथापि, क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई है।
- छ) पाटित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है ।
- झ) घरेलू उद्योग की मालसूची में अत्यधिक वृद्धि हुई है । घरेलू उद्योग ने भारी वित्तीय घाटे पर माल को निपटाने के लिए निर्यात किया तथा उत्पादन रोक दिया ।
- ञ) भारी मांग के बावजूद घरेलू उद्योग के मात्रात्मक मापदण्डों में गिरावट आई ।
- ट) क्षति के एक मापदण्ड के रूप में पाटन मार्जिन अत्यधिक है ।
- ठ) रोजगार, मजदूरी तथा उत्पादकता से पाटन के प्रतिकूल प्रभाव का पता नहीं चलता है । तथापि अन्य प्रमुख मापदण्डों में गिरावट से इन मापदण्डों में सुधार निश्चयावली हो जाता है ।
70. अतः प्राधिकारी ने यह पाया है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।
- छ. कारणात्मक संबंध

#### क्षति के अन्य ज्ञात कारक तथा कारणात्मक संबंध

71. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के मात्रात्मक तथा कीमत प्रभाव के संबंध में वास्तविक क्षति की मौजूदगी, उसके कीमत कटौती तथा कीमत ह्रासकारी प्रभाव तथा पाटनरोधी नियमावली में सूचीबद्ध अन्य प्रमुख मापदण्डों की जांच करने के बाद प्राधिकारी ने इस बात की भी जांच करने के बाद प्राधिकारी ने इस बात की भी जांच की है कि क्या पाटित आयातों से इतर अन्य कारक से भी घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । तदनुसार, निम्नलिखित मापदण्डों की जांच की गई है :-

**क) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा तथा कीमत**

तीसरे देशों से संबद्ध वस्तु के आयात में गिरावट आई है। इसके अलावा, तीसरे देशों से आयात कीमत संबद्ध देशों से आयात कीमत से काफी अधिक है।

**ख) माँग में कमी**

आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की माँग में वृद्धि प्रदर्शित हुई है। घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण देश में माँग में कमी को नहीं माना जा सकता।

**ग) खपत की पद्धति में परिवर्तन**

खपत संबंधी आंकड़ों से यह पता नहीं चलता है कि उत्पाद की खपत की पद्धति में कोई खास परिवर्तन आया है।

**घ) प्रौद्योगिकी का विकास**

किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रौद्योगिकी में ऐसे किसी खास परिवर्तन का साक्ष्य नहीं दिया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

**ङ.) विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा**

संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है। आवेदक संबद्ध वस्तु का प्रमुख उत्पादक है और उसका उत्पादन तथा बिक्री में बड़ा हिस्सा है। किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रतिस्पर्धा की स्थिति में अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहारों का कोई अन्य साक्ष्य प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है।

**च) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन**

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री में घाटा हुआ है। तथापि, घरेलू बिक्री में हुए घाटे को क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ अलग रखा गया है और निर्यात से जुड़े घाटे पर विचार किए बिना भी क्षति की पुष्टि होती है।

**छ) घरेलू उद्योग की उत्पादकता**

यद्यपि उत्पादकता में वर्ष 2008-09 तक वृद्धि हुई है तथापि उत्पादन में भारी गिरावट के कारण वर्ष 2009-10 में गिरावट आई है। तथापि, क्षति अवधि के दौरान समग्र उत्पादकता लगभग समान स्तर पर रही है। यद्यपि वर्ष 2006-07 तथा 2007-08 में उत्पादकता जांच अवधि से तुलनीय थी तथापि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई।

72. उपर्युक्त कारणेतर विश्लेषण से यह पता चलता है कि किसी अन्य ज्ञात कारक से घरेलू उद्योग को क्षति प्रतीत नहीं होती है।

### कारणात्मक संबंध को दर्शाने वाले कारक

73. यद्यपि उपर्युक्त मापदण्डों से इस बात की पुष्टि होती है कि घरेलू उद्योग को क्षति अन्य कारकों की वजह से नहीं हुई है तथापि यह नोट किया जा सकता है कि निम्नलिखित मापदण्डों से यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है :

(i) घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत कीमतों और संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत कीमतों में भारी अंतर है। परिणामतः घरेलू उद्योग ने बिक्री अवसर तथा बाजार हिस्सा गंवाया। अतः बाजार हिस्से में गिरावट और बिक्री अवसर प्रत्यक्षतः संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण गंवाए गए हैं।

(ii) पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में भारी कटौती हो रही है। परिणामतः घरेलू उद्योग बिक्री लागत में वृद्धि के अनुपात में बिक्री कीमत बढ़ाने में समर्थ नहीं हुआ।

(iii) लाभ, लगाई गई पूंजी पर आय तथा नकद लाभ में गिरावट प्रत्यक्षतः पाटित आयातों के कारण आई है।

(iv) आयातों में समग्र रूप में भारी वृद्धि हुई है। परिणामतः घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है। मालसूची में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग काफी समय तक उत्पादन रोकने के लिए बाध्य हुआ था। देश में भारी मांग होने के बावजूद घरेलू उद्योग का उत्पादन बाजार में पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण बंद हुआ था।

(v) संबद्ध देशों से हुए आयातों के बाजार हिस्से में अत्यधिक वृद्धि हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई।

(vi) घरेलू उद्योग कई मापदण्डों के संबंध में नकारात्मक बन गया।

74. प्राधिकारी ने नियमों में निर्धारित सिद्धान्तों के आधार पर घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत निर्धारित की है। घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध देशों से संबद्ध आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। यह क्षति मार्जिन निम्नानुसार बनता है :

### क्षति मार्जिन दर्शाने वाली तालिका

| देश     | उत्पादक/निर्यातक          | क्षतिरहित कीमत<br>अम.डॉ./कि. ग्रा. | पहुंच मूल्य<br>अम.डॉ./कि. ग्रा. | क्षति मार्जिन<br>अम.डॉ./कि. ग्रा. |
|---------|---------------------------|------------------------------------|---------------------------------|-----------------------------------|
| चीन जन. | मै. वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. | ***                                | ***                             | ***                               |

|      |   |     |     |     |
|------|---|-----|-----|-----|
| गण.  | ट्रेड कं. लि. (उत्पादक)                               |     |     |     |
|      | मै. वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड.<br>ट्रेड कं. लि. (निर्यातक) |     |     |     |
|      | अन्य सभी संयोजन                                       | *** | *** | *** |
| यूआई | सभी उत्पादक/ निर्यातक                                 | *** | *** | *** |

### निष्कर्ष

75. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि :

- क संबद्ध देशों से उत्पाद का भारत को निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है ।
- ख घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।
- ग वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण हुई है ।
- घ क्षति संचयी रूप से संबद्ध देशों से आयातों के कारण हुई है ।

### झ. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

76. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से भारत में उत्पाद का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है । किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी । इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों का लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का हास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी । उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के दो या अधिक स्रोत रख सकते हैं ।

77. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहारों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में एक ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

### ज. सिफारिश

78. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी । निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सूचना प्रदान करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था । पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू और सम्पन्न कर तथा संकारात्मक पाटन मार्जिन एवं ऐसे पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के बाद, प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई परिणामी क्षति को समाप्त करने के लिए निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना अपेक्षित है ।



79. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी स्पिन तथा प्रेस उत्पादों के लिए अलग से निर्धारित पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन, के एक कमतर भास्ति औसत के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के भार और कीमत के संबंध में पर्याप्त अंतर है। अतः इस मामले में संदर्भ कीमत या निर्धारित शुल्क के रूप में पाटनरोधी शुल्क उचित नहीं होगा। प्राधिकारी संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातक के सीआईएफ मूल्य के प्रतिशत के रूप में निकाले गए मूल्यानुसार शुल्क के रूप में पाटनरोधी उपाय लागू करने की सिफारिश करते हैं। तदनुसार, संबद्ध देशों में मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित शुल्क तालिका के कॉलम 7 में उल्लिखित प्रतिशत को लागू कर निकाली गई राशि के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

| 1        | 2           | 3             | 4           | 5                                       | 6                                       | 7                 |
|----------|-------------|---------------|-------------|---|---|-------------------|
| क्र. सं. | टैरिफ शीर्ष | वस्तु विवरण   | देश         | उत्पादक                                 | निर्यातक                                | सीआईएफ मूल्य का % |
| 1        | 7013        | ओपल ग्लासवेयर | चीन जन. गण. | मै. वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. ट्रेड कं. लि. | मै. वेनझोऊ ह्यूईशंदा इंड. ट्रेड कं. लि. | 41.61             |
| 2        | 7013        | -वही-         |             | उत्पादक/निर्यातक का कोई अन्य संयोजन     |   | 110.17            |
| 3        | 7013        | -वही-         | यूएई        | कोई उत्पादक                             | कोई निर्यातक                            | 36.73             |

इस अधिसूचना के प्रयोजार्थ "पहुंच मूल्य" का तात्पर्य सी.शु. अधिनियम, 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य से है और उसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3ख, 8ख 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल हैं।

#### 80. आगे की प्रक्रिया:

इस सिफारिश के परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार के आदेशों के खिलाफ कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY****(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 25th August, 2011

**Final Findings**

**Subject : Final Findings of the Anti-Dumping investigation concerning imports of Opal Glassware originating in or exported from China PR and UAE.**

- No. 14/24/2010-DGAD.**—Having regard to Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD rules).
2. Whereas M/s La Opala RG Ltd. on behalf of the domestic industry (herein after referred to as the Applicant) has filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 as amended from time to time (herein after referred as Rules), alleging dumping of Opal Glassware, (hereinafter also referred to as the subject goods), originating in or exported from China PR and UAE (hereinafter referred to as subject countries). The embassies of subject countries were notified about the receipt of fully documented application as per Rule 5(5).
  3. The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the Applicant to justify initiation of the investigation, decided to initiate the investigation against imports of the subject goods from the subject countries. The Authority notified Embassies of the subject countries in India about the receipt of the application claiming, inter alia, allegations of dumping and consequent injury to the domestic industry before proceeding to initiate the investigation in accordance with Rule 5(5) of the AD Rules. The Authority issued a public notice dated 26<sup>th</sup> August 2010 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries, in accordance with the Rule 6(1) of the AD Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

**A. PROCEDURE**

4. The procedure described herein below has been followed in the present investigation:
- i. The Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the above Rules, received a written application from La Opala RG Limited on behalf of the domestic industry, alleging dumping of 'Opal Glassware' (hereinafter also referred to as the subject goods); originating in or exported from China PR and UAE (hereinafter also referred to as the subject countries).
  - ii. The Authority notified the Embassies of the subject countries in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5;
  - iii. The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry issued a public notice dated 26<sup>th</sup> August 2010 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of 'Opal Glassware' originating in or exported from subject countries, in accordance with the sub-Rule 6(1) of the AD Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.
  - iv. The Designated Authority sent a copy of initiation notification dated 26<sup>th</sup> August 2010, to the Embassies of the subject countries in India, known exporters from subject countries, known importers/ users and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days from the initiation notification.
  - v. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3).
  - vi. The Embassies of the subject countries in India were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters was also sent to them along with the names and addresses of the known exporters.
  - vii. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
    - a. Arc International Middle East, East LLC, UAE.
    - b. Sanghai Family Industrial Development Co. Ltd., China PR
    - c. Wenzhou Huishunda Industrial Co. Ltd., China PR
    - d. Sanyam Ceramics Ltd., China PR
    - e. Shenzhen Guanagong Co. Ltd., China PR

- f. Xianning Huimeida Industry & Trade Co. Ltd., China PR
  - g. Shaoxing Jielong Glassware Co. Ltd., China PR
  - h. Anhui Deli Glassware Co. Ltd., China PR
  - i. Yiwu City Longfei Imports and Exports Co. Ltd., China PR
  - j. Wenzhou Cathylin International Trade Co. Ltd., China PR
  - k. Anhui Sunhere, China PR
  - l. Zhejiang Chengtai, China PR
  - m. M/s Whole Wealth Limited, China PR
- viii. In response to the above notification, following exporter has responded:
- a. Wenzhou Huishunda Industrial Co. Ltd., China PR
- ix. Questionnaires were sent to the following known importers / users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
- a. Talwar Agencies Pvt Ltd., New Delhi
  - b. Home Maker Enterprises Pvt Ltd., New Delhi;
  - c. Taneja Crockery Pvt Ltd. New Delhi;
  - d. Chiraj Appliances Pvt Ltd. Kolkata;
  - e. Paras International New Delhi;
  - f. Baron Agencies Pvt. Ltd. Kolkata;
  - g. Aditya Promoters Ltd. New Delhi;
  - h. Seven Seas Corporation, Thane, Maharashtra;
  - i. Laxmi Crockery Pune Pvt. Ltd., Pune, Maharashtra;
  - j. Vishal Retail Ltd., New Delhi;
  - k. Siddharth Enterprises, Baruch, Gujarat;
  - l. Merge Enterprises, Mumbai, Maharashtra;
  - m. Raj Agencies, Pune, Maharashtra;
  - n. Hamilton House wares Pvt. Ltd., Dadra;
  - o. K.P. International, New Delhi;
  - p. Trade Trekkers, New Delhi;
  - q. W.K.C Glassware Pvt Ltd., New Delhi;
  - r. Rudra International; New Delhi.
- x. In response to the above notification, the following importers have responded:
- a. M/s Hamilton Housewares Private Limited
  - b. M/s Aditya Promoters Limited
- xi. The Authority had made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- xii. A Market Economy Treatment (MET) questionnaire was forwarded to all the known exporters/producers and Embassy of China PR in New Delhi. The Authority informed known exporters that it proposes to examine the claim of the applicants in the light of paras 7 and 8 of Annexure I of the AD Rules. The exporters/producers of the subject goods from China PR were therefore requested to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 of the Annexure of the AD Rules to enable the

Authority to consider whether market economy treatment be granted to cooperative exporters/producers from China PR.

- xiii. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the period of investigation.
- xiv. Optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- xv. Preliminary Findings recommending imposition of provisional anti dumping duty in respect of the subject goods from the subject countries were issued by the authority on 27/06/2011.
- xvi. The authority conducted an oral hearing of interested parties on 29/07/2011, subsequent to which written submissions and rejoinders have been submitted by the interested parties. These submissions, to the extent relevant, have been duly examined/addressed in this findings.
- xvii. Verification of data and information including those relating to the claim for market economy status submitted by the cooperative producer / exporter from China PR has been carried out.
- xviii. A Disclosure statement was issued on 16.08.2011 as mandated under Rule 16, disclosing essential facts to form the basis of this Final Findings. The comments received thereon, to the extent relevant, have been examined in this findings.
- xix. Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2009 -31st March 2010 (Period of Investigation). The examination of trends, for the purpose of injury analysis, covered the periods 2006-07, 2007-08 and 2008-09 and the Period of Investigation.
- xx. \*\*\*in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the AD Rules.

#### **Submissions made by Ministry of Economy, Government of UAE:-**

- 5. The following submissions were made by the Ministry of Economy, UAE:-
  - i) The advance intimation was received by UAE Embassy in New Delhi on 1.9.2010 and the case was initiated on 26.8.2010. This is inconsistent.
  - ii) The product scope is very broad and a wide range of product types are covered in that. These individual products are not alike.
  - iii) The request of the petitioner to examine the performance of two plants separately for the very peculiar facts of the present case will give a distorted

picture of the domestic industry as it includes a new plant set up in September, 2007.

- iv) Exports made by UAE have not caused injury to the domestic industry as the UAE export prices were rising significantly over the injury period. It is, inter-alia, stated that average price of imports from other countries was lower and share of UAE imports in total imports has declined.
- v) The injury claimed by the petitioner is not supported by the figures presented in the petition. The complaint has not provided evidence of alleged material injury. On the other hand, the figures point to healthy domestic industry with increase in volume and volume of domestic sales, production capacity and decrease in stock.
- vi) The methodology used in the construction of normal value based on domestic industry's cost of production has been disputed.
- vii) The estimated landing charge of export is highly exaggerated. The alleged injury is attributable to factors other than imports and no causality is found.

### **Examination by Authority:-**

6. The Authority has examined the above issues as under:-

- i) Advance Intimation letter to the Embassy of UAE in New Delhi was issued by e.mail on 23.8.2010 and the proceedings were initiated on 26.8.2010. Thus, the Government of UAE was notified prior to initiation of the investigation.
- ii) The Authority considers that the product under consideration in the present case in Opal Glassware which is produced and sold in different types. Different types of Opal Glassware constitute one product in terms of raw materials, general usage (i.e. serving ) and customs classification. While the specific uses of different Opal Glassware products such as bowls, plates, cups etc. may be different, it does not render different types of articles. Different Opal Glassware products are sold in 'sets' which may offer a wide range of the product under consideration and the manufacturers can readily switch from one type of Opal glassware to the other. However, the Authority has considered the cost / price of the subject goods on the basis of weight rather than number / sets so as to obviate the problem posed by the variety of sizes/types involved in the latter.
- iii) The Authority has carried out the injury assessment for the domestic industry as a whole and not plant-wise. The cost of production of new plant has not been considered in isolation for this purpose.
- iv) The Authority has undertaken a cumulative assessment of effects of imports from subject countries on the domestic industry. The Authority is required to do so under the Rules as the conditions specified in the Rules are met in the present case.
- v) The various parameters of injury including relevant economic parameters have been duly examined by the Authority at appropriate places in these findings.
- vi) The Authority notes that none of the producers / exporters from UAE has cooperated in the present investigation and provided requisite information relating to normal value in the prescribed form and manner. In the absence of evidence of normal value based on domestic selling price or actual cost of

production of a manufacturer in UAE, the Authority has constructed the normal value on the basis of best information available on record.

- vii) The Authority notes that no exporter from UAE has furnished exporters questionnaire response indicating export price. Therefore, the Authority intends to determine the export price for UAE as per the methodology indicated in the relevant para of the present findings. The causal link has also been examined in the present findings.

**Post Preliminary Finding Submissions:-**

7. Post Preliminary Findings, Following submissions have been made by the UAE Authorities:
- i) UAE Ministry of Economy has reiterated that no prior notice about the initiation of the AD investigation has been received by the UAE Embassy in Delhi.
  - ii) No communication of the preliminary findings has been officially received by the UAE Authorities. This is a procedural violation.
  - iii) The alleged injury caused to the domestic industry is not established. In this regard no explanation has been given regarding the indicators which have shown a positive trend during the POI such as domestic sales, capacity installed, selling price, production, employment and wages.
  - iv) The causal link is not established between the increase of imports of the subject product and the alleged material injury. The finding at page 22 (ii) of PF that the domestic industry has been forced to reduce the prices is misleading as there was continuous increase in selling price during the injury period.
  - v) The non attribution analysis is incomplete as no explanation has been given regarding the impact of over capacity on domestic industry. Further, no explanation has been given regarding imports from third countries whose prices are lower than the import prices of UAE.

**Examination By Authority:-**

8. The Authority has examined the above issues as under:
- i) The Authority reiterates the position as at para 6(i) above. In any case, it is noted that the Government of UAE have duly participated in the investigation and made submissions both before and after the Preliminary Findings. Those submissions have been duly taken on board and examined in the Authority's Preliminary Findings and in the present Findings.
  - ii) The Preliminary Findings were published in the Gazette of India and also uploaded on the website of The Department of Commerce, Government of India. Thus, the findings were in public domain.
  - iii) It is not necessary that material injury to the domestic industry is to be established on all economic parameters. The AD Rules mandate only an evaluation and examination of all relevant economic factors and indices having a

bearing on the state of industry. In the present investigation, injury is established on vital economic parameters such as profitability, cash flow, inventories, return on capital employed, capacity utilization which have resulted from price under cutting and price suppression effects of the dumped imports from the subject countries.

- iv) The causal link issue have been examined in the appropriate place in this Findings. The finding at page 22 at sub para (ii) of Preliminary Findings refers to the fact that the domestic industry had reduced the selling price vis a vis the increase in the cost of sales. The same is appropriately reflected in this Final Findings.
- v) As regard the over capacity of the domestic industry, it is noted that the capacity of the domestic industry during POI is at the same level as the demand. Therefore, it is not the case of over capacity. The imports from other sources are at a price higher than the cumulative price from the subject countries.

### **Issues raised by other Interested Parties**

- 9. The interested parties have raised following issues with regard to the present investigation:
  - (a) There is no evidence of factory shut down. The Director's report in the annual report or intimation to stock exchanges does not show shutdown of factory.
  - (b) The domestic industry has resorted to excessive confidentiality in disclosing the information in the petition. Annual reports have not been provided for the entire injury period.
  - (c) Methodology involved in segregating the imports from the raw import data has not been disclosed in the application, nor the raw data has been made available to the importers. Soft copy of the import data has not been made available to the interested parties. This is important in view of the fact that raw data includes all kinds of Glassware, whereas the scope of the product under consideration is limited only to glasswares.
  - (d) Separate margins have to be determined for Opal Glasswares made out of the "Spin Technology"
  - (e) Essential documents that are being relied upon by Directorate General of Anti Dumping and Allied Duties and Domestic Industry in the investigation has not been provided despite prayers in public hearing.
  - (f) Importer has requested Domestic Industry to provide IBIS data in public file. For this DI made submission that they are bound to provide that evidence only which is reasonably available with them. Either meaning of this submission is that which they procure is unreasonably available with them.



- (g) The reason for making available the import statistics are :
- a. Evidence which is being relied upon must be made available to the party which may be adversely affected by that evidence.
  - b. To find the methodology adopted for filtering the raw data.
  - c. Designated Authority is relying on data obtained from DGCI&S after refining it without disclosing the methodology adopted for doing refinement.
- h) While the data obtained from DGCI&S has been adopted by DGAD in Preliminary Finding, shows imports from 39 countries only imports from 7 countries have been considered in the Preliminary Finding. Hence, the Anti Dumping Agreement filed by Domestic Industry is in correct.
- i) If Designated Authority finds the claim for providing raw data is in excess of the rights granted, Designated Authority may pass speaking order to that effect so that appropriate legal action may be taken.
- (j) Import Statistics provided by the petitioner is blatantly erroneous and the investigation should not have been initiated based on the statistics provided.
- (k) Import statistics included products other than Product under Consideration.
- (l) Country of origin has been altered to falsely construct causal link.
- (m) Determination of export price is incorrect. Domestic Industry has through some means converted all these denominations into 'kgs'. The methodology adopted in such conversion is incorrect and without scientific basis.
- (n) Though Domestic Industry is suppose to file information for 4 yrs, including POI, financial statements for POI alone have been made available.
- (o) Claim of injury has no co-relation to the position shown in the financial statement. Published annual reports of the petitioner shows profits, whereas the petitioner has claimed financial losses.

### **Examination by the Authority**

10. The issues raised by other interested parties are examined as under:
- (a) The production suspension was seen by the verification team in the premises of the petitioner's factory. No interested party has established any statutory requirement to report suspension of production either to stock exchange or in annual report.
  - (b) It is noted that the petitioner has made available the financial statements for the entire injury period.

- (c) The authority notes that the petitioner has made available the methodology followed in segregating the imports of the subject goods from the raw import data.
- (d) The Authority proposes to make such a comparison only in respect of China PR from where producers / exporters have submitted requisite information in the form of EQR (Exporter Questionnaire Response) for the purpose. However, in case of UAE from where no producer / exporter has furnished relevant information, It is not feasible for the Authority to determine separate dumping and injury margin for spin and press products as the import data does not distinguish products on the basis of technological process through which it has been manufactured.
- (e) The Rules permit the Designated Authority to collect information from its own sources. Further, such information collected by the Designated Authority is not required to be disclosed to the interested parties. The Designated Authority is entitled to collect information from its own sources and record findings on that basis. Further, the Designated Authority is not obliged to disclose information which is otherwise not in public domain.
- (f) The Authority notes that the domestic industry has provided information showing country wise volume and value of imports in discharge of requirements of Part-1 of the application proforma. The domestic industry has also made available transaction wise listing of imports of the product under consideration which has formed the basis for determination of volume and value of imports contained in the petition.
- (g) The domestic industry has already made available both the transaction wise imports listing and import statement which has been explained in the letter earlier filed by the domestic industry. The importers have got opportunity to comment on the same. The Designated Authority is not obliged to disclose information procured by the authority which is not in public domain
- (h) The Authority has considered imports of product under consideration alone. The DGCI&S data at customs sub heading 7013 include all types of glassware products-both PUC and non-PUC. Therefore, DGCI&S data shows 39 countries, whereas sorted data of IBIS provided in the petition contains only 7 countries from where the PUC has been imported. Authority notes that imports of non-PUC are not relevant for the present purpose.
- (i) As the raw bill of entry wise data of DGCIS is not in public domain, the same has not been made available to interested parties.
- (j) The Authority has taken into account only those import transactions that pertain to the product under consideration particularly when there is no dedicated ITC HS code for the subject goods. Authority also notes that the petitioner has made available bill of entry wise imports data relied in their petition. The interested parties have argued that such import data was understated and did not include

their own imports. The investigation has now shown that the actual volume of imports is higher than what the domestic industry had claimed.

- (k) The Authority has taken into account only those import transactions that pertain to the product under consideration particularly when there is no dedicated ITC HS code for the subject goods.
- (l) It has not been established that the domestic industry has altered country of origin in any import transaction.
- (m) Export price will be determined based on the information made available by the responding Chinese exporter which has been duly verified. As regards export price for non cooperative exporters of China, the authority proposes to rely upon the representative lowest export price of the cooperative exporter of China PR. As regards UAE, the authority has determined export price on the basis of best available information.
- (n) The petitioner has submitted a copy of the Annual Reports for the entire injury period, which have been made available to the interested parties through public file.
- (o) The authority has relied upon verified information with regard to profits of the domestic industry during the relevant period. Profits in annual reports includes profits on stocks of the last year, which were valued at a price much below cost of production.

#### **Post Disclosure submissions of Interested parties**

11. The following are the post disclosure submissions of interested parties:-

- a. Requirement of Rule 16 has not been complied with. Export data being relied upon in the investigation to determine dumping margin, injury and causal link not made available.
- b. Request for another public hearing.
- c. Investigation being conducted in a haste, thus, is endangering justice.
- d. Suspension of production have not been reported to SEBI or in the annual report, which are necessary legal requirements to report such instances and therefore the claim of the domestic industry is false.
- e. Methodology adopted in filtering the raw data was not made available.
- f. Petitioner had filed import statistics from IBIS. The Authority has adopted DGCI&S for injury analysis.
- g. The petitioner has changed country of origin in the import data.
- h. Claim of Injury contradicts profitability claim in financial statements. Incorrect conclusion has been drawn by the Authority that inventories were valued at

prices much below cost of production. Financial statements provided to us do not reflect any such assertion. There is no disclosure of any write off of the inventories in the financial statements.

- i. Disclosure of financial statements by the petitioner after due date of filling rejoinder.
- j. The domestic industry has argued that the ADD should be imposed on ad-valorem basis in view of significant difference in the price of the product produced through two technological processes.

### **Examination by the Authority**

12. The Authority has examined the above mentioned issues as follows:-

- a. The Authority has relied upon information provided by the responding exporter and the IBIS information. IBIS information provided by the petitioner was made available to the interested parties in the petition itself. The actual information provided by the responding exporter and importer cannot be disclosed to other interested parties, as these parties have claimed confidentiality. The Authority notes that Rule 7 proscribes disclosure of any confidential information either in disclosure statement or in the final findings. It is clarified that since IBIS has captured much higher volume of imports as compared to DGCI&S, the Authority has adopted IBIS data for the purpose of present investigation.
- b. The Authority notes that oral hearing in the present case was held on 29.07.2011, where the interested parties were heard at length. No new grounds have been advanced by the interested parties to warrant another oral hearing. Further, issues raised by the interested parties have been adequately addressed in the final findings.
- c. The Authority notes that the investigations are being conducted within the time frame provided under the law. Some of the interested parties chose not to respond to the notice of initiation and responded to the Authority at a quite belated stage, almost after nine months from the date of initiation. No cogent reasons have been given for such a belated response. In any case, the Authority has addressed the issues raised by the interested parties.
- d. Some interested parties have repeated their argument that since the domestic industry has not reported suspension of production before the concerned authority, the claim cannot be accepted. The Authority notes that finding on material injury has been recorded on the basis of trends in production, sales and capacity utilisation, where all legal requirements have been complied with. Production suspension is only an additional ground claimed by the petitioner. Further, Authority has recorded these findings on the basis of information filed by the interested parties and information verified by the Designated Authority. The

Authority has conducted on the spot verification at the premises of the domestic industry and has seen the evidence in support suspension of production by the domestic industry.

- e. The petitioner had made available detailed transaction wise IBIS data. The interested parties demanded an explanation on how the import data was analysed to arrive at volume and value of imports. The domestic industry provided a note containing methodology adopted for analysing the import data and determining volume & value of imports. The same was made available to interested parties through the public file.
- f. It is clarified that the Authority has adopted IBIS data for determination of volume and value of imports, as IBIS has captured much higher volume of imports as compared to DGCI&S.
- g. The Authority has verified the import data and found that there is no change made by the petitioner. There are a few import transactions wherein the product description states "France", but country of origin states UAE or China. These imports have to be included within the subject countries for the present purposes
- h. The Authority has duly verified the claim of profitability made by the petitioner and has recorded the preliminary findings and the present findings on the basis of such verified claims. It is noted that the petitioner is producing other products also.
- i. With regard to inventory valuation, the Authority notes that the petitioner has provided sufficient evidence showing that its inventory valuation does not include full cost of production; including selling, general & administrative costs and interest costs. The Authority also notes that the annual report does not show that the statutory auditors have opined that the inventory valuation is inconsistent with the accounting standards.
- j. The Authority also notes that the petitioner company is not a single product company. It has earned revenue and profits from other operations as well, such as windmill operation.
- k. It has been argued on behalf of importers that one of the essential documents to be filled along with the petition (i.e., annual report) was made available to them on 8th Aug 2011 (i.e., 11 months and 12 days after the investigation initiation ). It is further argued that the interested parties were not given opportunity to provide the comments on such information filed so late. The Authority notes that the relevant information for the POI had been filed by the domestic industry along with the application. However, the importers themselves have participated in the proceedings at a belated stage of the investigation. The investigations in the present case were initiated vide notification dated 26<sup>th</sup> Aug., 2010 and the importer responded for the first time to the Designated Authority as late as on 28.07.2011, i.e., after 11 months from the date of initiation and after the

preliminary findings were issued. Further, the petitioner had made available its non confidential version at the time of filing of petition, a copy of the same was made available to the interested parties through public file and a copy was forwarded to the foreign producers along with notice of initiation. None of the interested parties raised the issue regarding annual reports of the petitioner till issuance of the preliminary findings.

- I. The domestic industry's request for ad-valorem duty has been duly addressed in the relevant part of the findings.

**B. Product under consideration**

13. The product under consideration in the present investigations is Opal Glassware of all types. Opal Glass is a milky white glass, widely used in lighting fixtures and tableware. It has a property of diffusing light, which makes Opal Glassware attractive. Sand/ Quartz, Lime, Dolomite, Trona, Orthoclase, Borax, Albite are used to produce opal glass for manufacturing opal glassware. The product under consideration is used for general serving including serving of tea, coffee, soup, and snacks.
14. Opal Glassware is classified under Custom Sub Heading No. 7013 under the Custom Tariff Act, 1975. The classification is, however indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.
15. The interested parties have argued that Opal Glassware are produced with two technologies - press and spin technology, leading to two different products. Goods produced through press technology only have been imported in India during the POI and therefore the scope of the product under consideration should be restricted to press technology product only. The interested parties have further argued that should the scope of the product under consideration cover both the types, in any case, the comparison for the purpose of dumping (and consequently injury) should be done by considering comparable technology.
16. The domestic industry has disputed the claim of the importers and has argued that goods produced through the two technology lead to the same product and both the domestic industry and the subject countries are producing the goods through both the technologies. The domestic industry has further argued that difference in technology does not lead to different products.
17. The Authority has examined the submissions of the interested parties in regard to product under consideration. The Authority has also conducted on the spot verification at the premises of the domestic industry as well as of the responding exporter from China PR. The Authority, in this regard, proposes to hold as follows:

- a. The product under consideration in the present investigation is Opal Glassware of all types. Under the Customs Tariff Act, the product has been described as glassware (in general) of a kind used for table, kitchen, toilet, office, indoor decoration or similar purposes. The scope of the present investigation is however restricted to opal glassware of a kind used for table, kitchen and office.
- b. Opal glasswares are produced through two technologies, i.e., spin (Centrifugal Process) and press technology (Dye Casting Process). The press technology is old and the spin technology is new. The products manufactured through the former process are lighter in weight and superior in quality and appearance compared to those manufactured from the latter process. The difference in the two technologies however does not render the two products dislike products. The goods produced through two technologies are opal glasswares and have the same usage.
- c. Domestic industry has argued that the import data cannot distinguish the associated technology involved in production of the product. On the spot investigation conducted at the premises of the responding producer/ exporter from China PR showed that the company had produced and exported to India subject goods manufactured through both the technologies during the POI. The domestic industry is also producing goods using both the technologies. Even though the producers in UAE have not fully cooperated with the Designated Authority, the available evidence shows that the UAE producer is also producing the goods using both the technologies.
- d. Since goods are being produced using both the technologies in India and subject countries and since difference in the products produced through two technologies does not render them different articles, the Authority notes that the scope of the product under consideration includes opal glasswares produced through both the technologies. As regards significant difference in the associated costs and prices, the Authority notes that the same is relevant only for the purpose of fair comparison for determining dumping margin and injury margin.
- e. The Authority notes that different kinds of glasswares are classifiable under Custom Sub Heading No. 7013. However, the scope of the product under consideration for the purpose of present investigation is limited to 'opal glasswares' of a kind used for table, kitchen, office or similar purposes. It is clarified that all other products falling under Custom Sub Heading No. 7013 are beyond the scope of the product under consideration in the present case.

**i. Like article**

18. With regard to like article, Rule 2(d) of the AD rules provides as under:

*"like article " means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation.*

19. The applicant has claimed that there is no known difference in applicant's product and subject goods imported from the subject countries and both are comparable in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. There is no significant difference in the subject goods produced by the applicant and those imported from the subject countries and both are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
20. The Authority notes that the subject goods produced by the domestic industry are like article to the same imported from the subject countries in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification.
21. The Authority notes that in regard to product under consideration an issue has been raised that opal glassware is manufactured using two types of technological processes namely: Dye Casting Process and Centrifugal Process. The products manufactured by Centrifugal process are lighter and superior in quality and finish compared to those manufactured by Dye Casting Process. The goods produced by both the technologies have different manufacturing cost and market value. However, since both the types of goods are commercially substitutable and have same general usage, they are treated as like products. For the purpose of fair comparison for determination of dumping and injury margin, the Authority has considered them separately. However, lower of the weighted averages of dumping margins and injury margins for the press and spin products has been considered for recommendation of anti dumping duty on the subject goods.

**D. Scope Of Domestic Industry and Standing**

22. Rule 2 (b) of the AD rules defines domestic industry as under:

*"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers only".*



23. The application has been filed by M/s. La Opala RG Ltd. as domestic industry. As per evidence made available, the applicant is a major producer of the subject goods and accounts for major share of the total Indian production of Opal Glassware. Therefore, petitioner satisfies the requirement of standing under the Rules and constitutes domestic industry within the meaning of Rule 2(b).

**E. DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN**

**Normal value**

**Market Economy Treatment for Exporters from China PR**

24. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption of China PR as a non-market economy country as per para 8(2) of Annexure 1 of the Rules, for purposes of an anti dumping investigation. Upon initiation, the Authority advised the producers/Exporters in the country to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status.
25. The Authority sent copies of the MET questionnaire to all the known exporters for rebutting presumption of non market economy in accordance with criteria laid down in para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China PR to advise producers/exporters in their country to provide information.
26. M/S Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd., China PR responded to the MET questionnaire. The following submissions have been made by the exporter:-

**Submissions made by the Exporter**

27. The exporter has submitted as under:
- b) Huishunda is a privately owned limited liability company since its establishment in 1996. The shareholders of the Co. include three private person. There are no parent companies or subsidiaries of the Co. which are affiliated with the company.
  - c) Huishunda is a limited liability Co. which is established according to the Company Law of the People's Republic of China, and conducts its operation pursuant to the market rules; there isn't any relationship between Huishunda and the national provincial and local governments including ministries or offices of those governments.
  - d) Huishunda produces and exports the subject merchandise to India independently, the company has no relationship with other producers or exporters of the subject merchandise.
  - e) Huishunda does not own or control other producers/ exporters of the subject merchandise.
  - f) There is operating term in the business license, upon expiration of the business license, if the shareholders to extend the contract period, they shall apply to the

approval authority six months ahead of the expiration and after approval of the pertinent authority, the business license will be renewed.

- g) There is no control on exports of the subject merchandise to India or other countries.
- h) The subject goods do not appear on any government list regarding export provisions or export licensing.
- i) The development of products is conducted independently by Co.'s technical and research department. When the sales department accepts sales order of product, the production department will instruct manufacturing plan to relevant department in the Co.
- j) Huishunda purchases raw material from the free market after negotiation with the suppliers and the prices of the major inputs are determined by the market value.
- k) Huishunda sells products to the distributors both in India and domestic market. Te Co. doesn't have any exclusive relationship or affiliated relationship with raw material suppliers, domestic or export customers.
- l) According to article of association, the general manager is appointed by the executive director. Other senior managers are appointed by general manager. There is no need to notify any governmental authorities about appointment of directors/ managers.

#### **Submissions of the petitioner**

28. It has been contended by the domestic industry that China PR should be treated as Non market economic country in view of the following:-
- (i) The response given to various questions in the MET questionnaire are very cryptic and insufficient
  - (ii) In response to Question 2 D, list of shareholders it has been stated by the company that out of three share holders of the company, two are private persons. The position of third shareholder has not been disclosed and the reason for the same has also not been provided.
  - (iii) In response to Question No. 2 H, it has been state that the company has no board of directors. How can a company which is incorporated under the Chinese company law, will not have a board of Director when it is the mandatory requirement for incorporation of the company under the law? On this ground, the MET should not be granted.
  - (iv) In response to Question No.5(g), it has been stated that Huishunda after tax profits of current year, it draws 10% of the profits as the Company's statutory reserve funds and 5-10% to its statutory welfare fund. IF the statutory reserve funds is not sufficient to cover the Company's loss from the previous year, the current year profit is used to cover such losses before allocation is made to the statutory reserve and welfare funds. Is this allocation and re-allocation of funds in consonance with the Chinese GAAP as is being claimed by the Company?
  - (v) The answer to Question No.5(h) clearly indicate that they suffered loss on account of export sales but no reason for the same is provided. To add further,

the Company distribute the profits unless the losses of previous fiscal years have been recovered. Hence, MET should not be granted.

- (vi) There is no information with regard to the source from which the machinery and other fixed assets were procured by Huishunda.
- (vii) In view of the incomplete MET response, their MET claims should be rejected.

#### **Examination by the Authority**

29. The Authority indicated, in the initiation notification that the applicant claimed determination of Normal value on the basis of the provision contained in para 7 of Annexure I to the Rules. Opportunity was also provided to the known exporters of China PR to rebut the presumption of normal value.
30. The Authority notes that as per Paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules, the presumption of a non-market economy can be rebutted, if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) of Paragraph 8, listed below, and establish the facts to the contrary.
  - a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
  - b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
  - c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
  - d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.
31. The Authority notes, barring Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd. none of the Chinese exporters have submitted questionnaire responses including the market economy questionnaire response nor have sought to rebut the non-market economy presumption. Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd. has filed exporter's questionnaire response as well as market economy treatment response which has been examined by the Authority.
32. The Authority has since verified the information submitted by Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd. in their MET Questionnaire response during the verification visit to the company in China PR. From the said verification, the Authority notes the following:
  - a) Originally the company was incorporated as Huishunda Household Appliances Company Limited in the year 1994.
  - b) The change of registration in the name of the exporter company i.e. Wenzhou Huishunda Industrial Trade Company Limited took place in the year 1997.

- c) The registered capital of the old company was originally RMB \*\*\* and investment contribution was made by four shareholders. As of August 26, 2002, the accumulated registered capital of the Company was RMB \*\*\* million after change. The Articles of Association for the new company were enacted in the year 2002 and the registered capital of the Company was enhanced to RMB \*\*\* million contributed by three shareholders, who were also holding the shares of the old company i.e. Huishunda Household Appliances Company Limited.
  - d) Current Articles of Association for the exporter company were enacted in the year 2004 with the same registered capital of \*\*\* million RMB and same shareholders with same contribution as in the Articles of Association, 2002. However, the capital contribution certificate in respect of shareholders for the enhanced registered capital could not be made available by the company as the same is not yet issued.
  - e) Fixed Assets Register for the year 1994 (date of establishment of the old company out of which the present company has grown) could not be provided to the verification team. Further, Auditor's Report and other relevant documents in respect of the old company were not available for verification.
  - f) Moreover, the capital verification report in respect of original registered capital of RMB \*\*\* was not made available. Thus, source of the fixed assets of the old company was not verified. Other relevant documents for the period of transition between the old and the new company were also not available for verification.
  - g) During the verification, it was found that the exporter had procured major raw materials except borax from local market of China. No evidence was provided to show that the prices of major inputs substantially reflect market values.
33. In view of the above and in view of the fact that the vital records / documents in support of market economy status in respect of the old company i.e. Huishunda Household Appliances Company Limited out of which the present exporter company has grown, have not been made available to the Authority, it is decided not to grant market economy status to Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd. In the circumstances, the Authority proceeds with the provision of para 7 of Annexure-1 to the Rules for determination of normal value for all producers/exporters in China PR.

#### **Methodology adopted for constructing Normal Value in case of China PR.**

34. Para 7 of Annexure I of the AD Rules provides as follows:

*"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any*

*similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments."*

35. The Authority notes that the petitioner has not submitted the relevant information for constructed value in market economy third country as the same is said to be not available. As per practice, the authority has resorted to constructed normal value in case of non market economy country in the absence of relevant information relating to alternative methods of determination of normal value. Accordingly, The Authority proposes to construct the normal value for all producers in China PR on the following basis: –
- (a) Prices of major input Borax, Boric Acid, Soda Ash have been considered on the basis of the international prices, i.e. World export price to China as per World Trade Atlas.
  - (b) Consumption of raw materials per unit of production has been considered on the basis of best information/data available on record.
  - (c) Conversion costs have been considered on the basis of best information/data available on record.
  - (d) Selling, general & administrative costs (including interest costs) have been taken on the basis of best information/data available on record.
  - (e) Profit has been added @ 5% of ex-factory cost excluding interest.
36. Accordingly, the Normal Value of Opal Glassware for all producers / exporters from China PR is determined at US\$ \*\*\* / kg. (for products manufactured through die- casting process) and at US \$ \*\*\* /Kg. (for products manufactured through Centrifugal process).

#### **Normal Value in UAE**

37. The Authority wrote to the known producers/exporters of the product under consideration in UAE advising them to respond to the Authority in the form and manner prescribed. A copy of the communication sent to the known exporters in UAE was also sent to the Govt. of UAE. However, none of the producers of the product in UAE have responded to the Designated Authority. The domestic industry has stated that efforts were made by them to get information/evidence of price of subject goods in the domestic market of UAE. The domestic industry has not been able to get any information/evidence of price of subject goods in the domestic market of UAE. The Authority therefore has determined Normal Value on the basis of information available on record in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. Hence, Authority has constructed the normal value for the producers / exporters in UAE on the following basis –
- a) Prices of major inputs Borax, Boric Acid, Soda Ash have been considered on the basis of the international prices i.e. export prices of the world to India as per World Trade Atlas, as the same to UAE are not available for the relevant period.
  - b) Consumption of raw materials per unit of production has been considered on the basis of best information/data available on record.

- c) Conversion costs have been considered on the basis of best information/data available on record.
  - d) Selling, general & administrative costs (including interest costs) have been taken on the basis of best information/data available on record.
  - e) Profit has been added @ 5% of ex-factory cost excluding interest.
38. Accordingly, the Normal Value of Opal Glassware for all producers / exporters from UAE is determined at US\$ \*\*\* / kg. (for products manufactured through die-casting process) and at US \$ \*\*\*/Kg. (for products manufactured through Centrifugal process). However, in the absence of bifurcated export price for the two products in respect of UAE, the Authority has adopted the average normal value of US \$ \*\*\*/Kg.

#### **Export Price**

#### **China PR**

#### **M/s Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd., China PR**

39. M/s. Huishunda, China in their response to exporter's questionnaire, has provided Transaction-wise information relating to exports to India in the form and manner prescribed. This information has been duly verified. There are 28 invoices covering the export sales by the Company to India during POI and all these transactions have been duly verified from the original records and relevant export documents. The Company has exported a total quantity of \*\*\* Kg. of subject goods to India including those manufactured through spin technology(Centrifugal process) during the POI of value US \$ \*\*\* (invoice value). The Authority notes that the export sales to India are on FOB basis in certain transactions and on CIF basis in certain transactions. Adjustments claimed by the exporter on overseas freight, overseas insurance, lump-sum expenditure including inland freight, port charges and ancillary expenses, credit cost and non refundable VAT have been verified from relevant documents. Thus, the net export price i.e. export price at ex-factory level, for M/s Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd., China PR is determined at US\$ \*\*\* /kg. (for products manufactured through die-casting process) and at US \$\*\*\* /Kg. (for products manufactured through Centrifugal process).

#### **Non-cooperative exporters**

40. In respect of exporters of China PR in the residual category, the Authority has considered the representative lower price of the cooperative exporter to India during POI. Adjustments on various heads as verified in respect of the cooperative exporter have been considered for non-cooperative exporters as well. Thus, the net export price for residual exporters of China PR is determined as US\$ \*\*\* /kg. (for products manufactured through die-casting process) and at US \$\*\*\* /Kg. (for products manufactured through Centrifugal process).

#### **Export price in UAE**

41. The Authority notes that neither any exporter from UAE nor any importer of subject goods in India has submitted the requisite Questionnaire response giving details of the export price to India. In the absence of requisite information from

the exporters/importers of subject goods from UAE, the Authority has adopted the export price (CIF) of US \$ \*\*\*/kg for all exporters of UAE based on IBIS data. As the bifurcation of exports into products manufactured through die-casting process and products manufactured through Centrifugal process is not available in IBIS data, the Authority is not in a position to work out the export price separately for both the products. Therefore, the export price at ex-factory level is determined as US\$ \*\*\*/kg. for Opal Glassware in general (both press and spin products) for all exporters of UAE after taking into account adjustments of US\$ \*\*\*/kg on freight, insurance, commission, port expenses, inland freight and bank charges, as claimed by the petitioner.

### Dumping margin

42. The Rules relating to determination of dumping margin provides as follows:-

"While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sales, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability"

43. The Authority notes that there is sufficient evidence that the subject goods have been exported by the subject countries during POI below their normal value. In view of the fact that 'press' and 'spin' are two different technologies rendering two distinct products with substantial difference in cost, quality and price, the Authority has considered it appropriate to separately compare normal value and export price at ex-factory level as determined above in respect of subject goods manufactured through die-casting (Press technology) process and centrifugal (spin technology) process. Accordingly, the dumping margin for the producers/exporters of the subject goods in the subject countries is determined as under:-

| Country     | Producer/<br>Exporter  | Product<br>type     | Normal<br>Value<br>USD/kg | Export<br>price<br>USD/kg | Dumping<br>Margin | Dumping<br>margin<br>weighted<br>average<br>(US\$/kg) | Dumping<br>margin<br>weighted<br>average<br>%<br>(Range) |
|-------------|--|---------------------|---------------------------|---------------------------|-------------------|---|--|
| China<br>PR | M/s Wenzhou<br>Huishunda<br>Industrial<br>Trade Co.<br>Ltd.,<br>(producer)<br>M/s Wenzhou<br>Huishunda<br>Industrial<br>Trade Co.<br>Ltd.,<br>(exporter) | 'Spin'<br>products  | ***                       | ***                       | ***               | ***   | 50-55  |
|             |  | 'Press'<br>products | ***                       | ***                       | ***               |   |  |
|             | All other  | 'Spin'              | ***                       | ***                       | ***               |   |  |

|     |                         |                              |     |     |     |     |         |
|-----|-------------------------|------------------------------|-----|-----|-----|-----|---------|
|     | combinations            | products                     |     |     |     | *** | 125-130 |
|     |                         | 'Press' products             | *** | *** | *** |     |         |
| UAE | All Producers/Exporters | Both Spin and Press products | *** | *** | *** | *** | 40-45   |

#### F. DETERMINATION OF INJURY TO THE DOMESTIC INDUSTRY AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

44. Annexure II (iii) of the Anti Dumping Rules requires that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subject to anti dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such dumped imports, in case it determines that:

- (i) The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;
- (ii) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

45. Following are relevant in this regard:

- (a) The margin of dumping from each of the subject countries is more than the limit prescribed above;
- (b) Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market, as would be seen from the following information:
  - a. The product manufactured by the producers from the subject countries inter-se and in comparison to the product manufactured by domestic industry has comparable properties. In other words, goods supplied by various subject countries and by the domestic industry are inter-se like articles.
  - b. Imported and domestic materials are being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product and imported product.
  - c. The landed values of such imported material from subject countries are below the selling price of domestic industry. This clearly establishes competition amongst Foreign Producers inter-se as also with Indian Producers.



- d. The exporters from the subject countries and domestic industry have sold the same product in the same periods to same customer. The petitioner has been selling the product directly as also through their agent and exporters from subject countries are exporting directly as also through their agent. The sales channels are comparable.
- e. Volume of imports from each of the subject countries is significant.
- f. Domestic producer and exporters from the subject countries sell the like product to the same category of customers and both are competing in the same market. Both are being used by the consumers interchangeably.

46. In view of the above, the Authority notes that it is appropriate to cumulatively assess the effects of imports of the subject goods from China PR and UAE on the domestically produced like article, in the light of conditions of competition between the imported products and the like domestic product.
47. Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.
48. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows:

*"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall incl. an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."*

49. The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject countries are more than the limits prescribed above. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the export prices from the subject countries were directly competing with the prices offered by the domestic industry in the Indian market.
50. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on, the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

**a. Volume effect of imports:**

51. Table below shows the position in regard to imports of subject goods in to India:

| Particulars                             | Unit    | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|---|---------|---------|---------|---------|---------|
| Import from China PR                    | MT      | 174     | 723     | 850     | 1,975   |
| Trend                                   | Indexed | 100     | 416     | 489     | 1135    |
| Import from U A E                       | MT      | 871     | 1,157   | 464     | 584     |
| Trend                                   | Indexed | 100     | 133     | 53      | 67      |
| Other Countries                         | MT      | 523     | 753     | 146     | 152     |
| Market Share in Imports-CHINA           | %       | 11.11   | 27.45   | 58.24   | 72.86   |
| Market Share in Imports-UAE             | %       | 55.53   | 43.94   | 31.77   | 21.54   |
| Market Share in Imports-Other Countries | %       | 33.36   | 28.61   | 9.99    | 5.60    |

52. From the above table, it is observed that :

- Volume of dumped imports from China PR has increased significantly in absolute terms over the injury period;
- Volume of dumped imports from UAE had declined during POI compared to the base year.
- The imports from China PR and UAE have a major share in total imports. While the share of subject countries in imports increased over the injury period that of other countries declined.

**Demand and market share**

| Particulars                             | Unit    | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|---|---------|---------|---------|---------|---------|
| Sales (domestic) of Domestic industry   | MT      | 2,367   | 2,456   | 2,573   | 3,390   |
| Trend                                   | Indexed | 100     | 104     | 109     | 143     |
| Imports in India from subject countries | MT      | 1,045   | 1,879   | 1,314   | 2,559   |
| Trend                                   | Indexed | 100     | 180     | 126     | 245     |
| Demand in India                         | MT      | 3,935   | 5,088   | 4,033   | 6,100   |
| Trend                                   | Indexed | 100     | 129     | 102     | 155     |
| <b>Market Share in demand</b>           |         |         |         |         |         |
| Subject Countries                       | %       | 26.56   | 36.93   | 32.58   | 41.95   |
| China PR                                | %       | 4.43    | 14.20   | 21.08   | 32.38   |

|                            |   |       |       |       |       |
|----------------------------|---|-------|-------|-------|-------|
| U A E                      | % | 22.13 | 22.73 | 11.50 | 9.57  |
| Other Countries            | % | 13.30 | 14.80 | 3.62  | 2.49  |
| Share of Domestic Industry | % | 60.14 | 48.27 | 63.80 | 55.56 |

53. From the above, it is seen that demand for the subject goods in India has shown an increasing trend except decline during 2008-09. However, it is seen that the market share of subject countries in demand of the product in India has increased significantly and that of the domestic industry has declined in POI compared to the base year.

**b. Price effect of Imports**

54. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, the cost of production, net sales realization (NSR) and the non-injurious price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject countries. The net sales realization was arrived after deducting all rebates and taxes. Landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the CIF value of subject imports. The landed value of imports was compared with net sales realization of the domestic industry and it was found that the dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry.

**Price undercutting**

55. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry. Authority has determined net sales realization considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty and cess. The comparison was done between net sales realization and landed price of imports. The Authority notes that the landed prices of the subject goods are significantly below the selling price of the domestic industry which suggests significant price undercutting being caused by the dumped imports.

|              |         | CHINA PR | UAE     |
|--------------|---------|----------|---------|
| Particulars  | Unit    | 2009-10  | 2009-10 |
| Landed Value | Rs./ Kg | ***<br>L | ***     |

|                              |         |       |       |
|------------------------------|---------|-------|-------|
| NSR of the Domestic Industry | Rs/ Kg  | ***   | ***   |
| Price Undercutting           | Rs./ Kg | ***   | ***   |
| Price Undercutting           | % Range | 45-55 | 30-40 |

It is seen that the landed price of imports of the subject goods are significantly below the net selling prices of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.

### **Price suppression**

56. In order to determine whether the dumped imports are suppressing the domestic prices, the Authority determined whether the effect of such imports is to prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. For the purpose, the net selling price of the DI has been compared with the cost of sales trends in cost of production and selling price of the domestic industry.

| SN | Particulars   | Unit    | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|----|---------------|---------|---------|---------|---------|---------|
|    |               | Rs/Kg   | ***     | ***     | ***     | ***     |
| 1  | Cost of Sales |         |         |         |         |         |
|    | Trend         | Indexed | 100     | 100     | 119     | 137     |
|    |               | Rs/Kg   | ***     | ***     | ***     | ***     |
| 2  | Selling price |         |         |         |         |         |
|    | Trend         | Indexed | 100     | 102     | 112     | 116     |

57. From the above, it is apparent that there is an increase in both the cost of sales and the selling price of the domestic industry during POI compared to the base year. However, the increase in the selling price is proportionately lower compared to the increase in the cost of sales, thereby reflecting price suppression.

### **c. Economic parameters relating to the domestic industry**

58. Annexure II to the AD Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the AD Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. The various injury parameters relating to the domestic industry are examined as follows:

**i. Production, domestic sales & capacity utilization:**

| Particulars          | Unit    | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|----------------------|---------|---------|---------|---------|---------|
| Demand               | MT      | 3,935   | 5,088   | 4,033   | 6,100   |
| Trend                | Indexed | 100     | 129     | 102     | 155     |
| Capacity installed   | MT      | 3,500   | 4,019   | 7,000   | 7,000   |
| Trend                | Indexed | 100     | 115     | 200     | 200     |
| Production           | MT      | 3,052   | 2,885   | 4,965   | 3,825   |
| Trend                | Indexed | 100     | 95      | 163     | 125     |
| Capacity Utilisation | %       | 87.20   | 71.78   | 70.92   | 54.64   |
| Domestic sales       | MT      | 2367    | 2456    | 2573    | 3390    |
| Trend                | Indexed | 100     | 104     | 109     | 143     |

From the above, it is noted that production has been fluctuating over the injury period. The production increased in POI compared to base year. Even when overall production has shown an increase by 25% points from base year and domestic sales have increased by 43% points in the same period, the demand of the product in the market has increased by 55% points as compared to base year, and the capacity utilisation of the domestic industry has declined. Sales of the domestic industry have increased over the injury period. However, increase in sales is proportionately below the increase in demand.

**ii. Profitability**

The profitability of the domestic industry in respect of domestic sales has been examined. It is noted that profitability of the domestic industry for the subject goods has significantly deteriorated over the injury period. It is also noted that the volume of dumped imports increased significantly in POI and the profitability of the domestic industry also declined significantly in POI to such an extent that the domestic industry was suffering significant financial losses, as could be seen from the following table.

| Particulars   | Units   | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|---------------|---------|---------|---------|---------|---------|
| Cost of Sales | Rs/Kg   | ***     | ***     | ***     | ***     |
| Trend         | Indexed | 100     | 100     | 119     | 137     |
| Selling price | Rs/Kg   | ***     | ***     | ***     | ***     |
| Trend         | Indexed | 100     | 102     | 112     | 116     |
| Profit/loss   | Rs/Kg   | ***     | ***     | ***     | ***     |
| Trend         | Indexed | 100     | 113     | 73      | -10     |

|             |              |     |     |     |     |
|-------------|--------------|-----|-----|-----|-----|
| Profit/loss | Rs<br>(lacs) | *** | *** | *** | *** |
| Trend       | Indexed      | 100 | 117 | 80  | -15 |

iii **Employment and wages:**

| Particulars | Unit    | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|-------------|---------|---------|---------|---------|---------|
| Employment  | No      | ***     | ***     | ***     | ***     |
| Trend       | Indexed | 100     | 109     | 119     | 117     |
| Wages       | Rs lacs | ***     | ***     | ***     | ***     |
| Trend       | Indexed | 100     | 122     | 140     | 189     |

It is seen that there has been increase in number of employees and also in wages during period of investigation as compared to base year

iv. **Productivity**

| Particulars               | Unit   | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|---------------------------|--------|---------|---------|---------|---------|
| Productivity per Employee | Kg/No  | 5,036   | 4,351   | 6,895   | 5,387   |
| Productivity per day      | Kg/Day | 8,478   | 8,014   | 13,791  | 10,624  |

It is seen from the above that there is an increase in productivity in POI compared to the base year.

v. **Return on investments and cash flow**

The return on investment has been determined considering profit before interest and capital employed for the product. Impact on cash flow has been determined considering profit before depreciation but after interest cost. It is noted that return on capital employed has significantly deteriorated in POI, as apparent from the following table

| Particulars     | Unit     | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|-----------------|----------|---------|---------|---------|---------|
| Profit/loss     | Rs./Lacs | ***     | ***     | ***     | ***     |
| Trend           | Indexed  | 100     | 117     | 80      | (15)    |
| Profit per unit | Rs/Kg    | ***     | ***     | ***     | ***     |

|  |          |     |     |     |     |
|--|----------|-----|-----|-----|-----|
| Trend                                  | Indexed  | 100 | 113 | 73  | -10 |
| Depreciation                           | Rs./Lacs | *** | *** | *** | *** |
| Trend                                  | Indexed  | 100 | 220 | 247 | 231 |
| Cash Profit                            | Rs./Lacs | *** | *** | *** | *** |
| Trend                                  | Indexed  | 100 | 141 | 118 | 41  |
| Cash profit per unit                   | Rs/Kg    | *** | *** | *** | *** |
| Trend                                  | Indexed  | 100 | 136 | 108 | 29  |
| Return on capital employed - NFA Basis | %        | *** | *** | *** | *** |
| Trend                                  | Indexed  | 100 | 62  | 55  | 20  |

The cash profit has shown a substantial and significant decline in POI. It is noted that the depreciation has increased. The domestic industry has added capacity during the period, resulting in depreciation. However, depreciation after 2007—08 increased, whereas the profits have steeply declined and the domestic industry has suffered loss during POI. The Authority notes that the decline in profits is not due to increase in depreciation expenses.

vi. **Inventories:**

| Particulars                            | Unit    | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 |
|--|---------|---------|---------|---------|---------|
| Average Stock                          | MT      | 443     | 528     | 1,234   | 1,844   |
| Trend                                  | Indexed | 100     | 119     | 279     | 417     |
| Average Inventory as no. of days sales | MT      | 71      | 63      | 205     | 155     |
| Trend                                  | Indexed | 100     | 88      | 288     | 218     |
| Domestic sales                         | MT      | 2,367   | 2,456   | 2,573   | 3,390   |
| Trend                                  | Indexed | 100     | 104     | 109     | 143     |

Due to dumped imports from subject countries, Domestic Industry has not been able to increase its sales commensurate with increase in production its goods. This has resulted in increase in inventories, as apparent from the table above, which has shown a very significant increase in POI. The domestic industry has been forced to take production shutdown in view of piling up of inventories, despite the fact that the production process involves running of furnace at a high temperature and one production shutdown has significant impact on the domestic industry.

**vii. Growth:**

Growth of the domestic industry in terms of capacity utilization, inventories and market share was negative, while the same in respect of production and sales was positive. However, the domestic industry has been forced to suspend production during POI. Growth in terms of price parameters, viz. profits, cash profits, profits and return on investment has been negative.

**viii. Ability to raise capital investments**

It is noted that the domestic industry has enhanced capacities in 2007-08 by adding a new plant at Sitargunj, for which fresh investments have been made. It is, however, noted that the enhancement of capacity has to be seen along with significant increase in demand of the product in the country.

**ix. Magnitude of dumping and dumping margin**

The dumping margin determined herein above in respect of cooperative exporter as well as non cooperative exporters from the subject countries is considered significant and above the de minimis level.

**Conclusion on injury parameters**

59. It is thus seen that:

- a) Imports from subject countries have increased in absolute terms. The increase in imports is significant.
- b) Imports have increased in relation to imports in India, production and consumption in India.
- c) Imports are undercutting the prices of domestic industry to a significant extent.
- d) Selling prices of the domestic industry increased. However, cost of production of the domestic industry also increased. The increase in the selling price was lower than the increase in the cost of production. The dumped imports have thus caused price suppression.
- e) Domestic sales increased over the injury period. However, the increase in sales was lower than increase in demand and the domestic industry faced significant pile up of inventories.
- f) The domestic industry added capacities, which appear to be in line with increase in present and potential demand of the product in the country. Utilisation of the capacities by the domestic industry has however declined during the injury period.
- g) Market share of the dumped imports has increased and that of domestic industry has declined.
- h) Profits, return on investment and cash profits of the domestic industry have deteriorated significantly.
- i) Inventories with the domestic industry have increased significantly. The domestic industry has undertaken exports and production shutdown to liquidate the inventories, at significant financial losses.
- j) Volume parameters of the domestic industry declined in spite of existence of significant demand.
- k) Dumping margins as a parameter of injury are significant.
- l) Employment, wages and productivity does not show adverse impact of dumping. However, deterioration in other vital parameters outweighs the improvement in these parameters.



60. The Authority, therefore, finds that the domestic industry has suffered material injury.

**G. Causal link**

**Other Known Injury factors and Causal Link**

61. Having examined the existence of material injury in terms of volume and price effects of dumped imports on the domestic industry, its price undercutting and price suppression effects and other vital parameters listed under the Anti Dumping Rules, the Authority has also examined whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry. Accordingly, the following parameters have been examined:-

**(a) Volume and prices of imports from other sources**

Imports of the subject goods from third countries have declined. Further, the import prices from third countries are at prices significantly higher than the import prices from subject countries.

**(b) Contraction in demand**

Demand for the subject goods has shown an increase during POI compared to the base year. The injury to the domestic industry cannot be attributed to the lack of demand in the country.

**(c) Change in pattern of consumption**

The data on consumption does not show any significant change in the pattern of consumption of the product.

**(d) Developments in technology**

There is no evidence of significant changes in technology by any interested party, which could have caused injury to the domestic industry.

**(e) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

The subject goods are freely importable. The applicant is the major producer of the subject goods and account for significant domestic production and sales. No other evidence of conditions of competition or trade restrictive practices has been brought to the attention of the Authority by any interested party.

**(f) Export performance of the domestic industry**

The Authority notes that the export sales of the domestic industry have incurred losses. However, the losses in the domestic sales have been segregated for the purpose of injury analysis and injury is established even without considering export related losses.

**(g) Productivity of the Domestic Industry**

Though there has been increase in productivity till 2008-09, the same declined in 2009-10 with the significant decline in production. However, productivity on overall basis during the injury period is almost at the same level. Even when the productivity in 2006-07 and 2007-08 were comparable to POI, the profitability of the domestic industry declined steeply.

62. The above non-attribution analysis shows that no other known factors appear to have caused injury to the domestic industry.

**Factors showing causal link:**

63. While the above parameters establish that injury to the domestic industry has not been caused by the other known factors, it can be noted that the following parameters establish that the injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports.
- (i) There is significant difference between the prices offered by the domestic industry and those offered by the exporters of the subject countries. Resultantly, domestic industry lost sales opportunity and market share. Thus, decline in market share and loss of sales opportunity is a direct consequence of dumped imports from subject country;
  - (ii) Dumped imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry. Resultantly, the domestic industry has not been able to increase the selling price proportionate to the increase in the cost of sales.
  - (iii) Deterioration in profits, return on capital employed and cash profits are directly a result of dumped imports;
  - (iv) Imports increased significantly in absolute terms. Resultantly, the inventories with the domestic industry increased. As a result of increase in inventories, the domestic industry was forced to suspend production for a considerable period. Suspension of production by the domestic industry despite existence of significant demand in the Country was due to presence of dumped imports in the market.
  - (v) Market share of the imports from subject countries increased significantly. As a direct consequence, the market share of the domestic industry declined.
  - (vi) Growth of the domestic industry became negative in respect of a number of parameters
64. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the Rules. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports from subject countries to calculate injury margin. The injury margins have, thus, been worked out as follows:

Table showing Injury Margin

| Country     | Producer/<br>Exporter                            | Product<br>type    | Non<br>Injurious<br>Price<br>USD/kg | Landed<br>value<br>USD/kg | Injury<br>Margin<br>USD/kg | Injury<br>Margin<br>weighted<br>average<br>(US\$/kg) |
|-------------|--|--------------------|-------------------------------------|---------------------------|----------------------------|--|
| China<br>PR | M/s Wenzhou<br>Huishunda<br>Industrial Trade Co. | 'Spin'<br>products | ***                                 | ***                       | ***                        | ***  |

|     |  |  |     |     |     |     |
|-----|--|--|-----|-----|-----|-----|
|     | Ltd., (producer)<br>M/s Wenzhou<br>Huishunda<br>Industrial Trade Co.<br>Ltd., (exporter) | 'Press'<br>products                          | *** | *** | *** |     |
|     | All other<br>combinations  | 'Spin'<br>products                           | *** | *** | *** | *** |
|     |  | 'Press'<br>products                          | *** | *** | *** |     |
| UAE | All Producers/<br>Exporters  | Both<br>'Spin'<br>and<br>'Press'<br>products | *** | *** | *** | *** |

## H. Conclusions

65. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:
- The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value;
  - The domestic industry has suffered material injury;
  - The material injury has been caused by the dumped imports of the subject goods from subject countries.
  - The injury has been caused cumulatively by the imports from the subject countries.

## I. Indian Industry's Interest & Other Issues

66. The Authority recognizes that imposition of anti-dumping duties might affect the price level of product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantage gained by dumping practices, would arrest the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. Consumers could still maintain two or even more sources of supply.
67. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

## J. Recommendation

68. The Authority notes that the investigation was initiated and it was notified to all interested parties. Adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted an investigation into

dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having finally established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive Anti-dumping duty is required to offset dumping and consequential injury to Domestic Industry.

69. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the weighted averages of margins of dumping and margins of injury, separately determined for spin and press products. The Authority further notes that there is a significant differentiation of the product under consideration in terms of its weight and price. Therefore, antidumping duty in terms of reference price or fixed duty would not be appropriate in this case. The Authority recommends imposition of anti-dumping measure as an ad valorem duty, worked out as a percentage of the CIF value of imports of the subject goods from the subject countries. Accordingly, definitive antidumping duty equal to the amount arrived at by applying the percentage indicated in Col 7 of the duty table given below is recommended to be imposed on all imports of subject goods originating in or exported from subject countries from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government.

| 1  | 2           | 3                    | 4        | 5   | 6  | 7              |
|----|-------------|----------------------|----------|---|--|----------------|
| SN | Tariff Head | Description of goods | Country  | Producer  | Exporter   | % of CIF value |
| 1  | 7013        | Opal Glass-ware      | China PR | M/s Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd. | M/s Wenzhou Huishunda Industrial Trade Co. Ltd., | 41.61          |
| 2  | 7013        | -do-                 |          | Any other combination of producer/exporter      |  | 110.17         |
| 3  | 7013        | -do-                 | UAE      | Any producer                                    | Any exporter                                     | 36.73          |

For the purpose of this notification, "landed value" means the assessable value as determined under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties levied under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

70. **Further Procedure:**

An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority